200 वर्ष पूर्व़
अंग्रेजो द्‌वारा नष्ट की गई
प्राचीन-गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का
पुनः उदय

भारत-पुनर्निमाण

गरीबी एवं महंगाई बेकारी एवं बीमारी

भय एवं भ्रष्ट्राचार व्यसन एवं प्रदूषण

व्यभिचार एवं बलात्कार

हिंसा एवं ऋण

से मुक्त

श्रेष्ठ भारत – समर्ध भारत

संग्रहकर्ता
रोबिन सिराना

।। सा विद्या या विमुक्तयें ।।

शिक्षा से सुराज्य

शिक्षा से व्यक्ति निर्माण।

व्यक्ति से कुटुम्ब निर्माण।

कुटुम्ब से समाज निर्माण।

समाज से राष्ट्र निर्माण।

राष्ट्र से विश्व निर्माण।

संस्कारी, समृद्ध एवं सुखी राष्ट्र-निर्माण के महायज्ञ में आप भी सहभागी बन सकते हैं।

भारत अपने उद्गम के उषः काल से ही ज्ञान की साधना में व्यस्त और 'रत' (मग्न) रहा है। कदाचित्, इसी कारण से ही उसका नाम 'भा' यानी 'प्रकाश' (ज्ञानरूपी प्रकाश) में रत अर्थात् 'भारत' पड़ गया।

भूमिका

अपनी विलक्षण शिक्षापद्धति के बलबूते पर ही भारत ने हजारों वर्षो तक विश्व का सांस्कृतिक नेतृत्व किया हैं। तदुपरांत उद्योग-व्यवसाय, कला-कौशल्य और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी वह अग्रगण्य रहा है।

भारतीय ऋषियों ने पदार्थो की रचना का विश्लेषण किया और आत्मतत्व का भी साक्षात्कार किया। उन्होंने तर्क, व्याकरण, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, तत्वज्ञान, औषधिविज्ञान, शरीर- रचना- विज्ञान और गणित जैसे गहन विषयों की रचना की। भारतीय शिक्षा का वटवृक्ष उन्होंने धर्म, नीति और ज्ञान के खाद और जल से सींचा था। इसलिए ही तत्कालीन समाज धार्मिक, नीतिमान् और बुद्धिमान् बन सका था। भारतीय समाज के नैतिक गुणों के विषय में ई.स. पूर्व 300 में ग्रीक राजदूत मेंगस्थनीज ने लिखा है, 'कोई भी भारतीय असत्य बोलने का अपराधी नहीं है। सत्यवादिता और सदाचार उनकी दृष्टि में अतीव मूल्यवान वस्तु है' इस प्रकार भारतीय शिक्षापद्धति द्वारा भारत ने केवल ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में ही नही, परंतु नीतिमत्ता, प्रामाणिकता और सदाचार की दृष्टि से भी नेत्रदीपक विकास किया था।

हमारी भारतीय आर्य पंरपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्थआ के रूप में गुरुकुलम् एवं पाठशालाएँ केन्द्र स्थान पर थे। सांदीपनि ऋषि के तपोवन में श्रीकृष्ण और सुदामा ने शिक्षा प्राप्त की थी। वशिष्ठ और विश्वामित्र ऋषि के विद्याश्रम भी प्रसिद्ध थे। तप-स्वाध्याय में निरत ऐसे ऋषि ही बच्चों को शिक्षा प्रदान करते थे। उन ऋषियों के संस्कारित जीवन की महक गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों के जीवन को सुगंधित कर देती थी। ऐसी शिक्षा पद्धति के विकसित उदाहरण थे, विश्वप्रसिद्ध नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्व विद्यालय । इसके अलावा वल्लभी, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, मिथिला, काशी, कश्मीर और उज्जैन आदि विश्वविद्यालय भी विख्यात शिक्षा केन्द्र थे।

तत्कालीन राजा महाराजा – श्रेष्ठजनों ने अपनी विपुल सम्पत्ति का अनुदान दे कर भारत के ऐसे विराट सरस्वती मंदिरों की स्थापना करने में अपना सहयोग प्रदान किया था। ऐसे विश्वविद्यालयों में हजारों की संख्या में विद्यार्थी विविध विषयों का अभ्यास करते थे और विश्वविद्यालय की कीर्तिपताका समूचे विश्व में लहराते थे।

भारत के विश्वविद्यालयों में भारत के ही नहीं बल्कि तिबत, चीन, जापान, कोरिया, और श्रीलंका जैसे देशों के भी ज्ञान – इच्छुक विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे।

हमारे प्राचीन भारत में शत-प्रतिशत साक्षरता थी। भारत के हर गाँव में एक पाठशाला थी, जहाँ पर सभी वर्ण के बालक एवं बालिकाएँ प्राथमिक अक्षरज्ञान और धर्मनीति की शिक्षा प्राप्त करते थे।

पाठशाला चाहे वह गुजरात की हो या बंगाल की, कश्मीर की हो या तमिलनाडू की, सभी पाठशालाओं की शिक्षा का एकमेव विशिष्ट उद्देश्य था – 'मानव के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास' । भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में भारतीय विद्यालयों ने ऐसे ज्ञान का अविष्कार किया की जिस के आगे समूचे विश्व के दार्शनिक और वैज्ञानिक भी नतमस्तक थे।

हमारे गुरुकुलों में ऋषि – महार्षिओं ने पुरुषों की 72 कलाओं एवं स्त्रीओं की 64 कलाओं का प्रशिक्षण देकर भौतिक क्षेत्र में भी सभी को सामर्थवान् बना दिया था। सिर्फ इतना ही नहीं, उन कलाओं को धर्मकला से नियन्त्रित करके उन्हें आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर भी किया था।

आज से 200 वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी भी देश में नही दी जाती थी। अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या प्रचार के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों में सबसे अग्रणी माना जाता था।

लेकिन मनुष्य के आंतरिक गुणों के उजागर कर के उस के दोषों का निर्मूलन करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा। मुसलमानों के शासनकाल के दौरान भारत के शिक्षाकेन्द्र, गृहशाला, पाठशाला, विद्यालय इत्यादि नष्ट-भ्रष्ट कर दिए गए। फिर भी मुस्लिम शासक – बाबर से लेकर औरंगजेब तक भारतीय शिक्षण व्यवस्था को इतना नुकसान नहीं पहुँचा सके, जितना अंग्रेजों ने पहुँचाया। अंग्रेजों ने मुसलमान शासकों की तरह न तो पाठशाला जलाई, न विद्यालय गिरा कर ध्वस्त किये, परंतु जैसे कोई गुप्तचर गुप्त वेष में शत्रु राज्य में जासूसी करने के लिए प्रवेश करता है, वैसे ही भारत की शिक्षाप्रणाली में प्रविष्ट हुए।

अंग्रेजों की इस कुटिलनीति का प्रधान चालबाज खिलाड़ी था मैकाले। उस की अनर्थकारी आधुनिकता शिक्षाप्रणाली की सफलता के परिणाम दिखाते हुए उसने कहा था कि, 'अंग्रेजी शिक्षापद्धति द्वारा भारतीय केवल नाम का ही भारतीय रहेगा, शरीर से ही भारतवासी होगा, किन्तु मन से, विचार से, वचन और आचरण से वह पूरा अंग्रेज ही बन जायेगा। 'इस विचार को, पद्धति को, क्रियान्वित करने के लिए प्राचीन पाठशाला (गुरुकुलम्) पद्धति का विनाश करना अनिवार्य था। इसलिए शकुनी नीति से गाँव-गाँव में चल रहे विद्यालय बंद करवा दिए। प्राचीन शिक्षा का सामाजिक एवं राजकीय मूल्य ही नष्ट कर दिए। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा पद्धति नष्टप्रायः हो गई। फलतः भारत में उत्तम मनुष्य, राष्ट्रभक्त, नीतिमान्, प्रामाणिक व्यक्ति दुर्लभ हो गये और अंग्रेजी शिक्षापद्धति के ढाँचे में ढले हुए निकृष्ट, व्यसनी, व्यभिचारी, आलसी, रोगी और अप्रामाणिक व्यक्ति, जो परोक्ष रुप से अंग्रेजीयत के समर्थक थे, ऐसे लोग देश का, समाज का नेतृत्व करने लगे तो रही –सही प्राचीन शिक्षाप्रणाली भी नेस्तनाबूत हो गई।

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असम्भव हैं।

अतः इस परम्परा को पुनः प्रस्थापित करनी ही चाहिए। तभी, मैकाले-शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारे देश में आज जो दुर्दशा हुई है, उस से हम भारत को बचा पाएंगे।

वर्तमान की सभी समस्याओं का मूल आधुनिक शिक्षा-प्रणाली ही है। इस शिक्षा को लेने वाले जैसे-जैसे बढ़ते गए... वैसे-वैसे गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, महंगाई, अनीति, अपराध, आत्महत्याएं, भष्ट्राचार, व्यभिचार, अनाचार और बलात्कारों की संख्या बढ़ती गई। वायु, जल, जमीन, जंगल और जानवर सभी आज दूषित हैं। ऐसी भयावह दुर्दशा के सूत्रधार प्रायः मैकाले-शिक्षण प्राप्त शिक्षित ही होते हैं।

गुरुकुलम् का मंगल आंरभ –

मूल बेड़ा (राजस्थान) निवासी एवं हाल साबरमती (अहमदाबाद) में रहने वाले श्री उत्तमभाई जवानमलजी शाह ने आधुनिक शिक्षा की भंयकरता एवं आर्य शिक्षण की कल्याणकारिता के विषय में सद्गुरुदेवों के द्वारा मूल्यवान् मार्गदर्शन प्राप्त किया।

और... राजनगर (अहमदाबाद) में प्रकाशपुंज समान गुरुकुलीय आर्यशिक्षापद्धति का पुनः उदय हुआ। पाश्चात्य जीवनशैली के कातिल जहर से संतानों को बचाने के लिए, पुरुषों की 72 एवं स्त्रीओं की 64 कलाओं पर आधारित कार्यशिक्षण ही श्रेष्ठ उपाय है, बस... इस पवित्र उद्देश्य और शुभ संकल्प के साथ, श्री उत्तमभाई ने आज से 23 वर्ष पहले अपने और अपने भाईयों के परिवार के पुत्र-पुत्रिओं को घर में ही रखकर आर्य-प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया। उसमें सफलता प्राप्त हुई, तो एक कदम आगे बढ़कर वर्षों तक 'सिद्धाचल-वाटिका' (साबरमती) में अपने घर में 25-30 बच्चों को गुरुकुल-शिक्षापद्धति के अनुसार प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया। इसके फलस्वरूप सूरत, मुंबई और अहमदाबाद में भारतीय संस्कृति को प्रकाशमान करने वाले अन्य गुरुकुलों का शुभारंभ हुआ।

और पिछले 6 साल पहले निवासी एवं निःशुल्क 'हेमचंद्रचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम्)' का सिर्फ 13 विद्यार्थियों की संख्या के साथ, वि.सं. 2065, मृगशीर्ष सुद त्रीज, रविवार, (दि. 30-12-008) के शुभ दिन पर साबरमती

(अहमदाबाद) में प्रारंभ किया गया था। आज इस गुरुकुलम् की प्रेरणा व मार्गदर्शन से देश के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक गुरुकुल शुरु हो चुके है।

‘गुरुकुलम्’ द्वारा ‘मैकाले-पुत्र’ नहीं ‘महर्षि-पुत्र’ का निर्माण –

‘हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला’ (गुरुकुलम्) आर्यशिक्षण प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ विकल्प है। यह संस्था आधुनिक विनाशकारी मैकाले शिक्षा-पद्धति से देश को मुक्त करवाने के लिए प्रयत्नशील है। व्यक्ति-निर्माण से कुटुम्ब-निर्माण, कुटुम्ब-निर्माण से समाज निर्माण, समाज निर्माण से राष्ट्र-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण से विश्वनिर्माण करने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है।
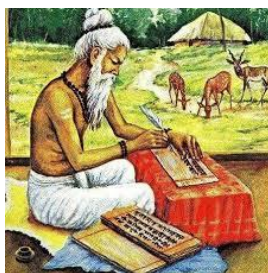
हम मानते हैं कि इस पाठशाला में से प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए विद्यार्थी ‘मैकाले-पुत्र’ नहीं किन्तु ‘महर्षि-पुत्र’ बनकर भारत को जगदगुरू बनाने में अपना योगदान करेंगे।

‘गुरुकुलम्’ (हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला) का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी के चरित्र्य निर्माण के साथ-साथ सर्वतोमुखी विकास करने का है, उसके लिए उसे ऋषि-महर्षियों द्वारा प्रस्थापित पुरूषों की 72 कलाओं और महिलाओं की 64 कलाओं पर आधारित प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार की शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी ‘ज्ञानी’, ‘गुणीयल’, ‘सक्षम’, ‘बुद्धिमान्’ और ‘चरित्र्यवान्’ बनता हैं।

‘गुरुकुलम्’ द्वारा श्रेष्ठ प्रशिक्षण –

विद्यार्थियों को इस पाठशाला में तत्वज्ञान, ईशभक्ति के संस्कारों के साथ-साथ संस्कृत-व्याकरण, न्याय शास्त्र, प्राकृत भाषा, गुजराती, अंग्रेजी, प्राचीन वैदिक गणित, आधुनिक गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, इतिहास, भूगोल, चित्रकला, रंगोली, हस्त-लेखन कला, संगीत कला (गीत-नृत्य-वादन), नाट्यकला, वकृत्व-कला, जादु-कला, माटी-कला, पाक-कला के साथ-साथ शारीरिक कला-कौशल, योग-कराटे-जूडो-कुश्ती, लाठी-दाँव, जिम्नास्टीक, रोप मलखम, पोल-मलखम, स्वदेशी खेल, घोड़ा गाड़ी, घुड़सवारी आदि सिखाया जाता है।

इस प्रकार, इस पाठशाला में शिक्षा-विद्या प्राप्त करके प्रशिक्षित हुए विद्यार्थी जीवन का सर्वतोमुखी विकास पा कर इस देश के लिए एक प्रखर राष्ट्र-भक्त और संस्कृति-भक्त बनकर बाहर आएंगे।

धर्म-रक्षा, संस्कृति रक्षा और राष्ट्र-रक्षा के श्रेष्ठ धर्मयज्ञ तुल्य हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला की प्रत्यक्ष मुलाकात लेने के लिए हमारा भावपूर्ण निमंत्रण है।

इस गुरुकुलम् को प्रत्यक्ष देखने के बाद आपकी......

आँखें अहोभाव और आश्चर्य से भरे हुए बगैर नहीं रह पायेगी....

लि.- संचालकगण

हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम्) **नवजीवन के मूलाधार एवं विकास के प्रधान अंगरुप शिक्षा के बीज को बचाने जैसा पुण्यकार्य, सामाजिक कार्य एवं आध्यात्मिक कार्य अन्य नहीं हो सकता। क्योंकिं शिक्षा से ही मानव में सदगुणों की पूर्णता पायी जाती हैं**

हमारा प्रयोजन...

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के सभी हानिकारक, बुरे और नकारात्मक पहलुओं से नई पीढ़ी को सुरक्षित बनाना है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति का भारतीयकरण और अध्यात्मकरण इस विद्याधाम का मुख्य उद्देश्य है।

जैन दर्शन और भारतीय आर्य संस्कृति उनके मूल्य और प्रबंध के अनुसार विद्यार्थियों का बौद्धिक, शारीरिक, वैचारिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं बहुमुखी विकास हो सके, ऐसी अध्ययन-अध्यापन-प्रणाली का संरक्षण, विकास, संवृद्धि एवं विनियोग इस विद्याधाम के महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं।

अध्ययन-अध्यापन कार्य में गुरु की प्रमुखता और समाज में गुरुओं के गौरव को पुनः संस्थापित करना है।

पुरुषों के लिए 72 और महिलाओं के लिए 64 कलाओं की शिक्षण पद्धति के माध्यम से धीरता, वीरता, विद्वत्ता, प्रज्ञानशीलता, चरित्र्यशीलता, राष्ट्रप्रेम, धर्मप्रेम, स्वनिर्भरता, साहसिकता, पराक्रमिता, निड़रता, स्वास्थ्य, उदारता, परोपकारिता, जीवदया, विनय, विवेक, व्यवहार-कुशलता, औचित्य, शीघ्र प्रत्युत्तर-क्षमता, शीघ्र निर्णय-शक्ति, नेतृत्व-क्षमता, दूरदर्शिता एवं श्रेष्ठ, समर्थ व्यक्तित्व धारण करने वाले नर-नारी का निर्माण करना हमारा लक्ष्य हैं।

तक्षशिला व काशी विश्वविद्यालय के लिए किसी समय पहचाना जाने वाला हमारा देश अब अपने कत्लखानों के लिए विख्यात होने पर गर्व करेगा।

ग्लोबलाईजेशन नये रोजगार देने के नाम पर हमारे बच्चों के हाथों में कसाई का छुरा थमा रहा हैं।.

दिनचर्या

- दिनचर्या आधुनिक विकृतियों से दूर जैन परम्पराओं के आचार-पालन और रासायनिक-जंतुनाशक रहित आहार के साथ व्यवस्थित की गई है।
- उत्तिष्ठ = ब्रह्म मुहूर्त में उठना
- संस्कृत व धार्मिक पठन
- प्रार्थना, ध्यान व प्राणायाम
- शारीरिक कुशलताएँ (योग, व्यायाम, लाठी, दौड़ इत्यादि)
- दर्शन एवं पद्यक्खाण
- दंतमंजन, त्रिफलांजन, नवकारशी, गौ-दोहन, धारोष्ण दुग्धपान
- अभ्यंग, स्नान व जिन पूजा
- धार्मिक अध्ययन-सूत्रपाठ-सामायिक
- मध्याह्न भोजन एवं वामकुक्षी
- ज्योतिष, संस्कृत, गणित, चित्रकला, संगीत इत्यादि विभिन्न विषयों का अध्ययन
- विभिन्न शारीरिक तालीम एवं क्रीडा
- सायं भोजन-स्वैर विहार इत्यादि
- दर्शन, संध्याभक्ति, आरती-मंगल दीपक
- गायन-वादन, नाट्य, वत्कृत्व इत्यादि कला-कुशलताओं का प्रशिक्षण
- शयन

अंग्रेज चालबाज मैकाले ने ऐसी शिक्षण प्रणाली प्रस्थापित की जिसको आज तक कोई भी बदल नहीं सका। उसकी शिक्षा पद्धति के कारण भारत के लोग अपनी संस्कृति, धर्म एवं अपनी मात्रभाषा से आप ही आप विमुक्त हो गए हैं। देश में आज अनेक देशी अंग्रेजी पैदा हो रहे है।

अध्ययन और प्रशिक्षण

विद्या

1.भाषाएँ - संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी।

2.जैन दर्शन और जैनाचार - षट्दर्शन, तत्व ज्ञान, आवश्यक सूत्र-अर्थ-रहस्य एवं क्रिया।

3.गणित - गणना की सरल और शीघ्र पद्धतियाँ, व्यवहारिक गणनाएँ।

4.आयुर्वेद - स्वस्थवृत्त (दिनचर्या-ऋतुचर्य-जीवनचर्या), चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांग ह्लदय, भाव प्रकाश इत्यादि गंर्थों का अध्ययन।

5.ज्योतिष शास्त्र - ऋतु ज्ञान, पंचांग, राशि काल, मुहूर्त, चौघडिये, होरा, प्रहर, चंद्र, योगिनी, सन्मुख काल, कुंडली, फलादेश, शगुन-स्वप्न संकेत विद्या, शारीरिक मुद्राओं का प्राथमिक ज्ञान, अष्टांग निमित्त इत्यादि का अध्ययन।

6.कौटिल्य का अर्थशास्त्र - संचालन (मेनेजमेन्ट) और नेतृत्व की प्रशिक्षण।

7.इतिहास - रामायण, महाभारत, जैन धर्म का इतिहास विभाग 1 से 4 सहित और विश्व की सर्व परम्पराओं का ज्ञान।

8.आन्वीक्षिकी विद्या - न्याय विद्या (बुद्धि कथाएँ, शतरंज की क्रीडा, पहेलियाँ)

9.नीतिशास्त्र - चाणक्य की नीतिशास्त्र एवं विभिन्न नीतिकथाएँ।

10.वास्तुशास्त्र - गृहवास्तु, नगरवास्तु, मंदिरवास्तु, आधारवास्तु।

11.पदार्थ ज्ञान और सामान्य ज्ञान - द्रव्य, परमाणु, स्कन्ध, द्रव्य और स्कंध का रुपांतरण,द्रव्य के विभिन्न गुण और विश्व की वर्तमान गंभीर समस्याएँ।

12.विविध शास्त्र - शिल्प शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, धातु शास्त्र, भूगर्भ-जल विद्या, तन्त्र शास्त्र, मन्त्र शास्त्र, यन्त्र शास्त्र, धातु शास्त्र, कृषि व पशु शास्त्र, कृषि इत्यादि 100 शिल्प, क्षेत्र विद्या (विश्व दर्शन-भूगोल) बृहद्क्षेत्र समास।

13.अध्यात्म विद्या - पंतजली योग दर्शन, अन्य योग- दर्शन, ध्यान, आत्मा का विकास क्रम, सम्यक्त्व व मुक्ति

14.व्यवसाय विद्या - लेखांकन (हिसाब), लेन-देन, क्रय-विक्रय, उत्पादन व निर्माण, व्यवस्था व संचालन, प्रचार-प्रसार।

अक्षर ज्ञान न तो शिक्षा का आरंभ है और न अंतिम लक्ष्य। वह तो उन अनेक उपायों में से एक हैं, जिनके द्वारा स्त्री-पुरूषों को शिक्षित किया जा सकता है। फिर सिर्फ अक्षर ज्ञान को शिक्षा कहना गलत है। - गांधी जी
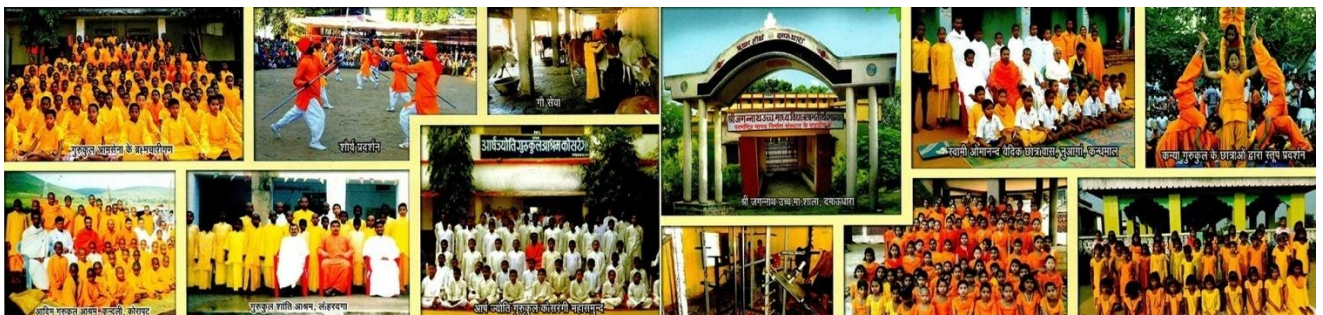
कला

- चित्रकला - रेखा-चित्र, आकृतियाँ, वास्तविक चित्र, चार्ली, व्यंग चित्र, छाया चित्र, रंगीन चित्र
- संगीतकला - गायन-विभिन्न रागों का ज्ञान व प्रशिक्षण
- वादन - सितार, ढोलक-तबला, हार्मोनियम, डफ, मंजीरा, पखवाज, संतूर, वेणुवादन, वायलिन, सारंगी, जलतरंग, इत्यादिं
- अभिनय/नाट्यकला - नृत्य(कत्थक,रास, दीवानृत्य, बांबुनृत्य, भांगडानृत्य, चामरनृत्य, झांझनृत्य इत्यादि) नाटक, एकांकी नाटक, संवाद, मुखमुद्राएँ और शारीरिक चेष्टाएँ।
- संभाषण - वत्कृत्व, भाषण, कथन।
- जादू कला - मूलभूत सिद्धांत व विभिन्न खेल।
- पाक कला - उबालना, तलना, सेंकना, तडका लगाना, स्वास्थ्य अनुकूल भोजन बनाना।
- सृजनकला - विविध चीज-वस्तुएँ बनाना एवं सर्जन करना।
- सिलाई - विविध टांकों का ज्ञान, कांतना, चरखा चलाना।
- श्रृंगार - शरीर-श्रृंगार, मंडप-श्रृंगार, गृह-श्रृंगार, मंच-श्रृंगार।
- पठन - शीघ्र और प्रभावी पठन का अभ्यास।
- लेखन - हस्तलेखन, लेख, निंबध कहानी, अहेवाल, योजनापत्र, भाषण,काव्य, नाटक, संवाद
- अन्य कला - गहूली, रंगोली, अतिथि सत्कार।

आधुनिकता की इस दौड़ में आज समाज के पेशेवर अपराधियों से ज्यादा खतरा सफेदपोश अपराधियों से है। इस देश को चोरों, डकैतों से ज्यादा रईस और पढ़े-लिखे लोग लूट रहे हैं।

कुशलता

साक्षरता विषयक- कुशलता : लेखन, पठन, श्रवण

शरीर संतुलन व प्रशिक्षण और क्रियाएँ –

- लाठीदाव,
- कुस्ती,
- जूड़ो,
- कराटे,
- रोप मलखम,
- पोल-मलखम,
- जिम्नास्टिक क्रीडा,
- सवारी-घुड़ सवारी,
- बैलगाड़ी,
- घोड़ागाड़ी इत्यादि चलाना।

सुश्रूषा विषयक –

- उपचार करना
- मलिश करना
- शेक करना
- पट्टी बांधना
- लेपन करना
- पगचंपी
- शरीर दबाना

बंधन विषयक –

- विभिन्न किस्म की गांठ बांधना
- फंदा बनाना

- नाडा बांधना
- बक्सा या बंडल बांधना
- पैकेट बांधना
- दवाई का पैकेट मोड़ना इत्यादि

प्रतिदिन की दिनचर्या

- वस्त्र धोना
- आसन बिछाना
- अलमारी – पेटी को सजाना इत्यादि

गौशाला विषयक -

गौ दोहन, गौबर-थोपन को थेपना इत्यदि

भक्ति विषयक -

आरती उतारना, दीया तैयार करना, दीया जलाना, धूप करना, भगवान की अंगरचना करना इत्यादि

आयोजन –

संचालन विषयक- नेतृत्व, खरीदना, देखभाल करना, यात्रा प्रवास, कार्यक्रम-महोत्सव इत्यदि का आयोजन करना।

अन्य कुशलताएँ –

स्वयं सेवक के लिए प्रशिक्षण (आफत-भूकंप-आग-बाढ़-बीमारी-मृत्यु के समय) आपातकालीन उपचार की तालीम, विविध राष्ट्रीय-सामाजिक-धार्मिक पर्वों की जानकारी-समझ, बाल-मेलों का आयोजन, अखबारों की जानकारी, उद्यापन-कार्य, मिट्टी-कार्य, जल संचय, ऐतिहासिक स्मारकों का प्रवास।

शिश्रा से मेरा मतलब है – बच्चे या मनुष्य की तमाम शारीरिक और आत्मिक शक्तिओं का सर्वतोमुखी विकास। - गांधी जी

झलक

- नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण
- बोझ रहित शिक्षा
- मैकाले शिक्षा का प्रभावशाली विकल्प
- सक्षम, सशक्त, अडिग, सौम्य, प्राज्ञ, निडर, विनम्र, विवेकी, धैर्यवान् एवं चारित्रवान् व्यक्तित्व का निर्माण।
- विद्या, कला व कौशल का त्रिवेणी संगम।
- समग्र और सर्वांगी विकास
- शुद्ध, विष से मुक्त(रसायनों और कीटनाशकों से रहित) संपूर्ण निर्दोष बल एवं स्वास्थय दायक आहार।
- खान-पान के लिए वर्षा ॠतु में प्राप्त दिव्य जल, वर्षा कालीन जल संचयन के लिए एक लाख लीटर क्षमता की टंकी।
- पात्र, वस्त्र, आसन, बैठक, शिक्षा, शयन आदि सभी की संपूर्ण भारतीय पद्धति से सुव्यवस्था।
- घुड सवारी, घोड़ा गाडी इत्यादि की प्रशिक्षण और अन्य बहुत कुछ...।

प्रत्येक समस्या आज की गलत शिक्षा की उपज है। आज देश-दुनिया की कोई भी समस्या ऐसी नहीं है, जिसको गंभीर बनाने में इस पैशाचिक स्कूली शिक्षा की बुनियादी जिम्मेदारी न हो।

युगों से भारत में ज्ञान, विद्या, शिक्षा के विषय में चिंतन एवं प्रयोग होते रहे हैं। भारत ज्ञान का उपासक रहा हैं। भारत में कहा गया हैं, ‘नास्ति विद्या समं चक्षुः’ । शिक्षा के बारे में एक सर्वस्वीकृत सूत्र है ‘सा विद्या या विमुक्तये’। विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करे। परंतु आज हम देखते हैं कि विद्या स्वयं मुक्त नहीं है। विद्या बाजार के बंधन में है, विद्या अर्थ के बंधन में है, विद्या शासन के नियंत्रण में है। इन नियंत्रणों से मुक्त नहीं होगी तो शिक्षा शिक्षार्थी को कभी भी मुक्त नहीं कर सकती, इसलिए प्रथम आवश्यकता है शिक्षा को ही बंधनों से मुक्त करने की।

गुरुकुलम् इस दिशा में प्रयास कर रहा है। गुरुकुलम् एक ऐसा शिक्षा केंद्र है जो समग्रता में विचार कर भारतीय शिक्षा का प्रतिमान विकसित करने हेतु प्रयासरत हैं। विगत 22 वर्षों से कुलपति माननीय उत्तमभाई शाह के द्वारा अपने ही चार बच्चों के साथ यह प्रारंभ किया, और समाज में इस शिक्षा का विस्तार संभवतः 500 बच्चों तक पहुंच गया है। शिक्षा के क्षेत्र में विगत 7 वर्ष में अध्ययन, अनुसंधान, पाठ्यक्रम निर्माण आदि कार्य चल रहा है। इस कार्य के साथ-साथ परिवार शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, विद्वानों, संघ, संस्था, एवं सभी धर्माचार्यों (संतो) का ध्रुवीं करण के क्षेत्र में प्रयास चल रहे हैं।

शिक्षा को ठीक करने के कई प्रयास व्यक्तिगत स्तर पर हो रहें हैं। उसी प्रकार छोटे-छोटे पैमाने पर भी अनेकानेक प्रयास हो रहे है। ऐसे सभी प्रयासों को संकलित करने का प्रयास भी इस गुरुकुलम् द्वारा ध्रुवीकरण के दौरान करना हैं।

आज भारतीय शिक्षा युरोपीय जीवनदृष्टि से पूर्ण रुप से ग्रस्त हो गई है। इसलिए भारतीय ज्ञानधारा का प्रवाह क्षीण हो गया है। भारतीय ज्ञानधारा आज अधिकृत नहीं मानी जाती है। परंतु वह सुरक्षित है देश के सामान्य जन के पास। यह सामान्य जन तुलना में अशिक्षित या कम शिक्षित है। वह पिछड़ा माना जाता है। उसका ज्ञान अधिकृत नहीं माना जाता क्योकिं उसके पास कोई प्रमाणपत्र नहीं है। ऐसे भारतीय ज्ञान को प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है ताकि समाज इससे लाभान्वित हो सकें।

आज शिक्षा से कोई भी संतुष्ट क्यों नहीं है? शिक्षा के बाजारीकरण से कौन से भीषण संकट पैदा हुए हैं? शिक्षित मनुष्य सुसंस्कृत भी होना चाहिए ऐसी अपेक्षा क्यों नहीं रखी जाती है? वर्तमान शिक्षा में किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है? शिक्षा का दायित्व समाज का है या सरकार का? शिक्षा में उद्योगे की क्या भूमिका है? शिक्षा में सामान्य जन की क्या भूमिका है? क्या शिक्षा आज भी समाज के लिए लाभदायी हो सकती है?

यहाँ विद्या, कला, कौशल, शौर्य एवं पराक्रम की शिक्षा से प्रशिक्षित कर बच्चों के जीवन को संस्कारित किया जाता हैं। प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी अपनी योग्यता को अपने जीवन का मूलाधार बनाता हैं। यहाँ ऋषि परंपरा के अनुसार, बिना किसी सरकारी योग्यता प्रमाणपत्र के विद्यार्थीयों को शिक्षित किया जाता हैं।

शिक्षा ऐसी हो जो राष्ट्रीयता का बोध कराए, राष्ट्र प्रेम का पाठ पढ़ाए, ऐसा न हो कि इन महत्वपूर्ण तत्वों को जीवन से विलुप्त कर दिया जाए। मुख्यतः हमारी शिक्षा मस्तिष्क, हाथ, और ह्लदय तीनों अवयवों का समग्र विकासोन्मुख शिक्षा-प्रणाली होनी चाहिए। जो गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली ही दे सकती है। शिक्षा कला-कौशल एवं पराक्रम से परिपूर्ण हो, जीवन के लिए मोक्ष साध्य होनी चाहिए। "सा विद्या या विमुक्तये" की भावना से ओतप्रोत हो।

गुरुकुलम् में भोजन – व्यवस्था

गोबर के कंडे और लकड़ी के चूल्हें पर भोजन पकाया जाता है। बारिश का पानी भोजन बनाने एवं पीने में उपयोग किया जाता है। भोजनालय में पीतल व मिट्टी के बर्तनों में भोजन पकाया जाता है। कहा जाता है कि जैसा आहार वैसा विचार और जैसा अन्न वैसा मन।

यहाँ पर आधुनिक इलेक्ट्रोनिक साधन का कम से कम उपयोग किया जाता हैं। फ्रीज, ओवन, कुकर, गैस आदि का उपयोग नहीं होता हैं।

अतः विद्यार्जन के साथ-साथ में विद्यार्थिओं के आहार पर भी विशेष ध्यान रखा जाता हैं। भोजनालय एवं संपूर्ण गुरुकुल के प्रांगण में गोबर और मिट्टी से लिपाई पोताई द्वारा स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है। भोजनालय में आसन पर बैठा कर चौकी के ऊपर थाली रख कर पित्तल-कांस्यपात्र में भोजन कराया जाता है। आरोग्य शास्त्र, धर्मशास्त्र, और नीतिशास्त्र की दृष्टि से भोजन बैठकर का करने का विधान है। कारण है कि आरोग्य का मूल आधार हम कैसा

भोजन करते है और कितना भोजन ग्रहण करते है और कैसे पचा सकते है इसी के ऊपर रहा है। अतः योग्य आहार, योग्य समय में और योग्य पद्धति से ही लेना चाहिए। अधिकतर रोग पाचन तंत्र के कमजोरी से ही होते है। खडे-खडे भोजन करने से पाचन तंत्र निर्बल होता है। आहार का पाचन प्राण वायु की गति बैठकर भोजन करने से जठराग्नि की तरफ होने से पाचन क्रिया सही होती है। लकडी के चूल्हे पर बनाया हुआ भोजन अत्यंत स्वादिष्ट होता है। भोजनालय में रासायनिक वस्तुओं का उपयोग नहीं होता है। किसी भी प्रकार का रंग, नींबू का फूल, बेकिंग पाउडर जैसी वस्तुओं का उपयोग नही होता है, शाक भाजी से लेकर अनाज तक सभी खाद्य वस्तुएँ जैविक विधि से उपजायी हुई प्रयोग में लाई जाती है। भोजन सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त से पहले कराया जाता है जो पूर्ण वैज्ञानिक है। प्रत्येक विद्यार्थियों को प्रतिदिन सुबह भारतीय गायों का उष्णोधर दुग्धपान

यह गुरुकुलम् मूल रुप से प्राचीन शिक्षा-व्यवस्था को पुनस्थापित कर भारतीय संस्कृति, परंपरा को अक्षुण्ण बनाने तथा सम्पूर्णतया भारत पूर्णोदय की तरफ अग्रसर हैं।

हमारा संकल्प शिक्षा द्वारा भारत का पुनर्निमाण का है। जो मुख्य रूप से गरीबी एवं महंगाई से, बेकारी और बीमारी से, भय और भ्रष्ट्रचार से, दुर्व्यसन और हिंसा से मुक्त भारत का निर्माण करें।

सारस्वत चूर्ण के साथ (जिससे बालक मेधावी और प्रतिभा सम्पन्न होता हैं) कराया जाता है। प्रतिदिन स्थानीय लोगो को निःशुल्क छाछ का वितरण किया जाता है। सदैव ऋतु अनुकूल एवं आयुर्वेदिक नियमों को ध्यान में रखते हुए भोजन की व्यवस्था की जाती है। भोजनोपरांत पाठशाला की बर्तनों की सफाई उपलों के राख द्वारा की जाती हैं।

आधुनिक परिवेश में शिक्षा का भारतीयकरण हो इस उद्देश्य के साथ वर्षों से विद्वज्जन, संस्था, संगठन अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के विस्तार हेतु देशभर में विभिन्न संस्थाये, संगठन एवं विद्वज्जनों, तथा साधु-संतो से सम्पर्क करके ध्रुवीकरण का प्रयास किया जा रहा है।

1. 'भारतीय शिक्षा करणीय कार्य एवं हमारा कर्तव्य' ऐसे विषयों पर सेमिनारों का आयोजन
2. 'भारतीय संस्कृति, संरक्षण एवं समृद्धि' हेतु त्रि-दिवसीय सेमिनारों का आयोजन।
3. देश की विभिन्न संस्थाओं, संगठनों एवं विद्वानो की संगोष्ठि द्वारा गुरुकुलीय शिक्षा विस्तार विषयक चर्चा विमर्श।
4. देश के सभी धर्म एवं संप्रदाय के अग्रणियों(जिस में सभी धर्माचार्यों) को बुलाकर गोष्ठि का आयोजन करना।
5. विभिन्न राज्यों एवं शहरों में आयोजित सेमिनार एवं गोष्ठिओं में गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का प्रचार-प्रसार।

उपरोक्त कार्यों की फलश्रुति के रूप में अधिकांश महानुभावो ने गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के पक्ष में समर्थन देते हुए गुरुकुलम् के प्रकल्प का सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार के प्रकल्प का विस्तार राष्ट्रीय स्तर पर करने का संकल्प लिया एवं स्वयं कटिबद्ध होने का शुभभाव भी प्रगट किया।

भारतीय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, वैसी होनी चाहिए, बहुत लोगों ने बहुत कुछ पढा-लिखा-सुना परंतु व्यवहारिक, प्रायोगिक रूप से समाज के समक्ष प्रस्तुत यह अद्भुत गुरुकुलीय शिक्षा प्रकल्प एक सराहनीय कार्य हैं ऐसा सभी का अभिप्राय रहा।

प्रस्तावना

अपने ही हाथों अपना नाश!

अंग्रेज तो इस देश से चले गये, लेकिन जाने से पहले विश्वविद्यालयीन शिक्षा द्वारा हजारों देशी अंग्रेज उन्होंने तैयार कर दिये थे। इस देश की धरती पर निरंतर अपना स्वामित्व बनाए रखने के लिए इनके पास एक ही उपाय था कि 'देश की प्रजा को हर तरह से बर्बाद कर दो, और इसके लिए उनकी संस्कृति का सर्वनाश करो!'

यह कार्य यदि विदेशी लोग करने जाएं तो यहाँ की प्रजा क्रुद्ध होकर विप्लव कर बैठेगी, इसलिए इस देश के लोगों के हाथों ही इस सर्वनाश के कार्यक्रम पर अमल करवाना अनिवार्य था। इसलिए देशी अंग्रेजों को तैयार किया गया। आज तो इन उपाधिधारक (डिग्रीवाले) पश्चिम- परस्त देशी अंग्रेजों की संख्या लाखों-करोड़ो तक पहुँच गई हैं।

इन देशी अंगेजों ने जाने-अनजाने प्राप्त हुए शैक्षिक पश्चिमी उत्राधिकारी के कारण संस्कृति के सभी क्षेत्रों के मूल पर आघात कर दिया है। मोक्षलक्ष्मी संस्कृत-वृक्ष से सभी अंगों को उन्होंने जड़ से हिला दिया है।

श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु बताते है कि सांस्कृतिक तत्वों को पश्चिम-परस्त रहस्यमय और अनपढ़ नीति-रीति के वर्तमान वेग से भी नष्ट करने का कार्य चालू रखा जाए तो भारतीय प्रजा के सांस्कृतिक अस्तित्व की आयु शायद सौ-दौ सौ वर्ष से अधिक नहीं रहेगी।

श्री वासु की विचारधारा भारतीय प्रजा के किसी भी स्तर के नेताओं के रूप में गिने जानेवाले सभी भाईयों तक पहुँचे तो मुझे लगता है कि उनके मस्तिष्कों में विदेशी एजेन्टों ने जो गलत विचार भर दिए हैं, वे

सब जड़ मूल से उखड़ जाएँगे और वे इस देश व समाज के उत्थान में अमूल्य योगदान देने में सक्षम होंगे।

पंन्यास चंद्रशेखरविजय जी

(श्री वासु के पुस्तकों की प्रस्तावना में से)

अंग्रेजों ने पाठ्य पुस्तकों द्वारा इस प्रकार भ्राम्रक इतिहास की परम्परा बनाकर तथाकथित देशी अंग्रेजों के एक वर्ग को पैदा कर, जाने से पहले यहाँ छोड़ दिया। इस गलत इतिहास के बल पर, इस देश के दो टुकड़े कर दिये गए, इतना ही नहीं भविष्य में ज्यादा टुकड़े होते रहें।

लॉर्ड मैकाले द्वारा 2 फरवरी 1835 को ब्रिटिश पार्लियामेंन्ट में बोले हुये शब्दः

"मैंने भारत की लम्बाई और चौड़ाई तक पूरा भ्रमण किया तथा एक व्यक्ति को भी नहीं देखा जो भिखारी और चोर हो। मैंने इतनी सम्पत्ति को इस देश में देखा, इतने ऊँचे नैतिक आदर्श, इतने योग्य लोग, मैं नहीं सोचता कि हम इस देश को जीत पायेंगे जब तक कि हम इस देश की रीढ़ की हड्डी जो कि इसकी आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक परम्परा है, को नहीं तोड़ देते हैं। इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि हमें उनकी पुरानी व प्राचीन शिक्षा प्रणाली व संस्कृति को बदलना होगा। क्योंकि यदि भारतीय सोचते हैं कि, जो कुछ विदेशी तथा अंग्रेजी वस्तु है, वह अच्छी तथा उनकी अपनी वस्तुओं से बहतर है तो वे अपना आत्म-सम्मान, अपनी नैसर्गिक संस्कृति को खो देंगे तथा वे वही बनेंगे जो हम चाहेंगे, एक सचमुच का गुलाम देश।"

अंग्रेजों के झूठ

आर्य प्रजा का उद्भव इसी देश में हुआ था। “आर्य लोग उत्तरी ध्रुव की ओर से भारत में बंजारा जाति के रूप में आए थे और द्रविड़ प्रजा को पराजित कर, इस पर उन्होंने अपना प्रभुत्व जमा दिया,” ये अंग्रेजों की कपोलकल्पित बातें हैं, मनगढंत बातें हैं। ऐसे करने के पीछे उनका ध्येय यह था कि ‘कभी भी आर्य प्रजा उनसे कहे कि आप लोग विदेशी हैं, अतः भारत छोड़कर चले जाएँ,’ तो उन्हें कह सकें कि ‘तुम लोग भी विदेशी हो, इस देश के मूल निवासी तो वास्तव में द्रविड़ ही हैं।‘

आर्य प्रजा लाखों वर्षों से यही की निवासी है। उसका क्रमबद्ध इतिहास भी है। लेकिन उन तमाम बातों को दबाकर, अंग्रेजों ने भ्रामक प्रचार शुरु कर दिया कि ‘आर्य, उत्तरी ध्रुव की ओर से आई बंजारा टोलियों के ही वंशज हैं,’ अंग्रेजों ने पाठ्य-पुस्तकों द्वारा इस प्रकार भ्रामक इतिहास की परम्परा बनाकर तथाकथिक देशी अंग्रेजों के एक वर्ग को पैदा कर, जाने से पहले यहाँ छोड़ दिया। इस गलत इतिहास के बल पर, इस देश के दो टुकड़े कर दिये गए, इतना ही नहीं भविष्य में ज्यादा टुकड़े होते रहें।

अंग्रेजों ने 150 वर्षों से भी कम समय में गलत इतिहास और भ्रामक शिक्षा द्वारा हिन्दुओं की भव्यता, धर्म, संस्कृति, चरित्र और गौरव का खंडन कर, अंग्रेजी संस्कृति के आराधक वर्ग को तैयार कर लिया। यह अल्पसंख्यावाला वर्ग 60 करोड़ जैसी विराट बहुसंख्यक प्रजा के सिर पर विदेशी संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन, रुचि-अरुचि, विचारशैली और अर्थ-व्यवस्था थोप देने के लिए रात-दिन प्रयत्नशील रहा। इससे बढ़कर और क्या अत्याचार हो सकता है? स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद यह आसुरी प्रवृत्ति अधिक बढ़ पाई हैं क्योंकि स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद भी अंग्रेजों ने हमारा सत्यानाश करने के उद्देश्य से शिक्षा नामक जो सुरंग दाग दी हैं, उसने शिक्षा क्षेत्र में से भारतीयता का नामोनिशान मिटा दिया हैं।

शिक्षा का ध्येय

देश की सही प्रगति का मूलाधार शिक्षा है। शिक्षा में चरित्र निर्माण करने की, मोक्षलक्ष्यी होने की और आसुरी बलों पर विजय पाने की क्षमता होनी चाहिए। वर्तमान सरकार के लिए प्रगति का मापदंड हिंसा, भ्रष्टाचार और शोषण द्वारा साध्य विशिष्ट वर्ग की आर्थिक उन्नति ही हैं।

इतिहास शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। इतिहास द्वारा प्रजा का चरित्र निर्माण होता है। गलत इतिहास से हीनग्रंथि पैदा की जा सकती है। प्रजा विदेशियों की मुहताज ही बनी रहे, उसे इतनी कायर भी बनायी जा सकती है। हमारी प्रजा भी इसी बात का दृष्टान्त है।

भाषा द्वारा मानस परिवर्तन

ट्रेवेलियन के मतानुसार अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से मुक्त रहे हिन्दू और मुसलमान भी अंग्रेजों को अपवित्र राक्षस समझते थे और उन्हें हटा देने के षड़यन्त्र बनाते थे। लेकिन जहाँ-जहाँ अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव फैलता गया वहाँ-वहाँ भारतवासियों का मानस परिवर्तन होता गया। वे अंग्रेजों को अपने महान उपकारक, उद्धारक और बलवान मित्र समझने लगे हैं। उन्हें संकीर्णता के लिए अंग्रेजों के प्रति वफादारी और भक्तिभाव रखने लगे हैं। देश का नसीब केवल

अंग्रेजों की सहायता और रक्षा से ही उदीयमान होगा, ऐसी मान्यता का प्रचार करते हैं।

आगे चलकर सर चार्ल्स ट्रेवेलियन बताते हैं कि जो युवक हमारी शाला में शिक्षा लेते हैं, वे अपने पूर्वजों और अभिभावकों का तिरस्कार करने लगे हैं। तदुपरांत वे अपनी राष्ट्रय संस्थाओं को अंग्रेजियत का स्वरूप दिलाने के लिए कटिबद्ध होने लगे हैं। अंग्रेजों को उखाड़ कर समुद्र में फेंकने के बजाय भारत के लिए अंग्रेजों की शिक्षा और रक्षा दोनों बातें अनिवार्य बन गई हैं, ऐसी मान्यता के समर्थक बन गये हैं।

ट्रावेलियन कहते हैं –'मैंने हिन्दुस्तान के ऐसे प्रदेश में वर्षों का समय गुजारा है, जहाँ अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का प्रांरभ नही हुआ। वहाँ के लोग अंग्रेजों का कट्टर दुश्मन मानते हैं और उन्हें खत्म कर देने के उपाय सोच करते हैं'।

'परंतु मै जब बंगाल में गया तब वहाँ हमने अंग्रेजियत से रंग देने के कारण वहाँ के शिक्षित भारतवासी अंग्रेजों का गला घोटने के बदले अंग्रेजों के साथ ज्यूरी में बैठने में और बैंच मजिस्ट्रेट बनने में धन्यता का अनुभव करते हैं'।

पुरानी प्रणालियों की ताकत का भय

आगे ट्रेवेलियन लिखते हैं कि 'यदि भारत की प्राचीन रीतियाँ व नीतियाँ एवं उनकी शिक्षा और साहित्य के अस्तित्व को यथाशीघ्र नामशेष न कर दिया तो संभव है कि कभी क्षणमात्र में ही भारत से हमारा अस्तित्व मिट जायेगा'।

शोध समिति के अध्यक्ष ने ट्रेवेलियन से पूछा था कि, 'आप की योजना का अंतिम ध्येय भारत और इंग्लेण्ड़ के बीच राजनैतिक संबंध का विच्छेद करना है या हमेशा के लिए उसे सुदृढ़ करना हैं'?

ट्रेवेलियन ने इसका उत्तर दिया था कि, 'मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतवासियों को अंग्रेजी शिक्षा देने से आखिरी परिणाम यह निकलेगा कि उनके इंग्लैण्ड से अलग हो जाने का काम अनंतकाल तक अंसभव बन पाएगा'।

'इसके विपरीत मेरा दृढ़ ख्याल यह है कि यदि भारतवासियों की शिक्षा प्रणाली को यथावत् छोड़ दिया जाए तो किसी भी दिन हम यहाँ से बहुत जल्द खदेड़ दिये जायेंगे'।

'मैंने बारह साल तक भारत में निवास किया है। प्रथम छह साल उत्तर भारत में गुजारे, जहाँ अंग्रेजी शिक्षा का इतना बोलबाला न था, लेकिन उनकी प्राचीन परंपराएं और शिक्षा कार्य जारी थे, जिससे वे अंग्रेजों को अपना जानी दुश्मन मानते और उन्हें हटा देने के लिये षड़यन्त्रों का आयोजन करते। जहाँ तहाँ भारत में से हमें खदेड़ देने की ही बातें सुनाई देती'।

'लेकिन मैं कलकत्ता आया। वहाँ अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण दूसरे ही हालात देखने को मिलें। लोग हमें उखाड़ फेंकने के बजाय, स्वतंत्र अखबार निकालने का, नगरपालिकाओं की स्थापना और अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार कर अधिकाधिक सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करने आदि के बारे में ही सोचते थे। वे वास्तव में पूरे अंग्रेज-परस्त बन गये थे'।

वह प्रसिद्ध पत्र – (Sir Charles Trevelian before parliamaentary Committee of 1853)

ई.स. 1853 की इस सर्वांगीण सोच विचार के बाद इस कंपनी के नियामकों ने 16 जुलाई, 1854 के रोज 'एज्युकेशनल डिस्पेच' के नाम से प्रसिद्ध हुआ पत्र गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी पर भिजवाया।

इस पत्र में नियामकों ने लिखा था कि 'शिक्षा की इस नई योजना का आशय शासनतंत्र के प्रत्येक विभाग को विश्वसनीय और काबिल नौकर-क्लर्क दिलवाने का है। उसका दूसरा हेतु यहा है कि इंग्लैण्ड के उद्योग-धंधों के लिए जिन अनेक

कच्चे मालों की आवश्यकता है और जिनकी इंग्लैण्ड़ के प्रत्येक वर्ग के लोगों में बहुत खपत है, वे सभी पदार्थ अधिक मात्रा में और पूरी निश्चितंता के साथ हमेशा इंग्लैण्ड़ पहुंचाते रहे और उसके साथ इंग्लैण्ड़ के तैयार माल की भारत में लगातार मांग बनी रहे, उसके लिए योग्य परिस्थिति और उसका अमल करने वाले लोगों को तैयार करना हैं'।

150 वर्षों से चूर-चूर हुआ भारत

आज से दो सौ साल पूर्व तक जो देश विश्व में शिक्षित माने जाने वाले देशों में अग्रसर था, जो विश्व का अग्रगण्य कृषिप्रधान और प्रथम स्तर का उद्योगप्रधान देश था, वही अंग्रेजों के 150 साल के शासन के बाद शिक्षा की दृष्टि से सबसे पिछ्ड़ गया। औद्योगिक रूप से वह टूट गया, बेकारों और बीमारों से भरा देश बन गया। हम अपनी मातृभाषा में शिक्षा देने के बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलाने में गौरव महसूस करते हैं। अपने प्रदेश की भाषाओं की लड़ाई में एक दूसरे का गला घोंटने या भारत संघ में से अलग हो जाने के लिए उतारू हो गए हैं। विदेशियों से प्राप्त कर्ज आदि को विदेशियों की सहानुभूति, सद्धावना और सहायता के रूप में स्वीकृत करते हैं। विदेशियों की सहायता बिना कुछ भी कर पाने में असमर्थ प्रमाणित हुए हैं।

परिस्थिति को पलटने के दो रास्ते

इस अत्यंत शोचनीय परिस्थिति को पलटने के केवल दो रास्ते हैं, या तो विशाल समुदाय के अशिक्षित भारतवासी विद्रोह कर इस अल्पसंख्यक शिक्षित सेक्युलरिस्टों को शासन के पदो से हटा दें अथवा जो थोड़े बहुत शिक्षित हैं, जो अंग्रेजी शिक्षा, विचारधारा या अर्थव्यवस्था से भ्रमित चलित नहीं हुए हैं, अपित उन्हें आपदा या बाधा समझते हैं और भारत के प्राचीन ज्ञान, साहित्य और विचारधारा में अनंत श्रद्धा रखते हैं, वे खुले मैदान में आकर भारतीय विचारधारा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और मोक्षलक्षी विज्ञान को आगे बढ़ाकर गाँव-गाँव उसकी ज्योति प्रज्वलित करें।

दूसरा रास्ता ज्यादा स्वीकार्य और कार्यक्षम हैं।

स्वाधीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य, विषय और पद्धति, तीनों में परिवर्तन लाने की आवश्यकता थी। उसके बदले मैकॉले की परंपरा को जारी रखकर शिक्षा को संपूर्णतया नौकरीलक्षी, पश्चिम परस्त और विदेशी प्रभाव से चकाचौंध वाली बना दी गई हैं।

सबसे करूण घटना तो यह है कि अंग्रेजों द्वारा लिखे गए झूठे इतिहास को भी चालू रखा गया। विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है, जो स्वाधीन होने के बाद भी विदेशियों द्वारा लिखित झूठा और भारतीय प्रजा के बीच अन्दरूनी द्वेषभाव पैदा करें, ऐसा इतिहास अपने बच्चों को पढ़ाता है। इसका कारण शायद यह भी हो कि विदेशियों ने भारतीय शासन को इतिल्ला दे रखी हो कि वे इतिहास में परिवर्तन न करें। भारत एक ऐसी सार्वभौम प्रजा है, जो अपने निजी

व घरेलू मामलों में भी विदेशी सलाह स्वीकार करती है और विदेशी दबाव के वश में बनी रहती हैं।

निश्चित मन से वापस गया आयोग

भारत स्वतंत्र हुआ उसके तुरंत बाद 'यू.एन.ओ.' का एक आयोग यह जाँच करने आया था कि मैकॉले द्वारा तैयार किये गए शैक्षणिक ढांचे से बाहर निकलकर, कहीं हम हमारी उत्तम प्राचीन प्रणाली को पुनः आरम्भ तो नहीं कर रहें। कमीशन के सदस्य सभी स्थानों पर घूम-फिर कर पूरी छानबीन कर के इस संतोष के साथ वापस लौट गए कि भारत अपनी निजी गौरवशाली संस्कृति के प्रति प्रयाण करने को सावधान या तत्पर नहीं हुआ है। वह अब भी अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति वापस लौट कर पाश्चात्य संस्कृति के साथ जो संबंध जुड़े हैं, उन्हें काट कर अपनी भव्यता के प्रभाव से, विश्व को चकाचौंध कर दें, ऐसी हालत में नहीं है। इस विश्वास के साथ निश्चित होकर कमीशन वापस लौट गया।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी न हमने अपनी शिक्षा का ढाँचा बदला, न ही अपने सही इतिहास का पुनर्लेखन किया, न ही विद्यार्थियों में अपनी मातृभाषा के प्रति भाव पैदा किया। वास्तव में हम जिस तेज रफ्तार से पश्चिम की हिंसक और शोषक अर्थव्यवस्था के प्रति आँख मूंद कर दौड़ गए और अरबों रूपयों का खर्च कर कारखाने खड़े करने लगे, उतनी ही तेजी से कारखानों को चलाने के लिए, मूलभूत कच्चे माल जितने ही आवश्यक हिसाबनबीश, संशोधक, खरीदी

और बिक्री करने वाले अधिकारी और तकनीकी ज्ञान वाले कारीगर पैदा हो पाएं, ऐसे परिवर्तन भी शिक्षा में किए।

छोटी उम्र के बच्चों पर क्रूरता से थोपा गया शिक्षा का बोझ

हम ऐसी शोषक और हिंसक अर्थव्यवस्था के प्यादे बन पायें, ऐसे विद्यार्थी जल्द तैयार करने के लिए बच्चों की शक्ति की परवाह किए बिना उनका पाठ्यक्रम बढ़ा दिए। अभ्यास के समय में कांट-छांट कर कम समय में ज्यादा विषय सीखने का बोझ उनके दिमाग पर लाद कर बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर बना दिए।

हमारा खंडित गौरव
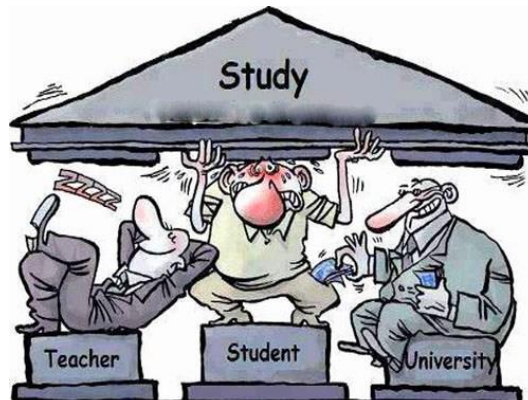
कारखाने बढ़ते गए, ग्राम्य उद्योग टूटते चले गये, जानवर कटते रहे, शिक्षार्थियों और विद्यार्थियों की तादात बढ़ती गई, परंतु सभी का समावेश हो सके, उसके लिए पर्याप्त शालाएँ नही बना सके। उन्हें शिक्षा देने के लिए आवश्यक योग्य शिक्षक भी तैयार न कर पाए। परिणामस्वरूप शालाएँ मानो औद्योगिक फैक्ट्ररियाँ हों, इस प्रकार उनमें पहली पाली, दूसरी पाली, तीसरी पाली की रचना कर शालाओं के गौरव को खत्म कर दिये।

अंग्रेज इतिहासकार का प्रमाण

अंग्रेज इतिहासकार लडर्लान 'भारत का इतिहास' नामक अपनी पुस्तक में जिक्र करता है कि – 'जिस गाँव में पुराना संगठन (पंचायतें) टिका हुआ है वहाँ प्रत्येक बालक लेखन, पठन और गणित कार्य अच्छी तरह जानता हैं लेकिन जहाँ-जहाँ हमने पंचायतों को बर्बाद किया है वहाँ ग्राम पंचायतों के साथ शालाओं का भी विनाश हो गया हैं। वहाँ बच्चों की लेखन, पठन और गणित कार्य सीखने की सुविधाएं नष्ट हो गई हैं।'

भारत पर विजय पाने से पूर्व अंग्रेजों ने हमारी समाज व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, राज्य पद्धति, युद्ध पद्धति, धार्मिक व्यवस्था, प्रजा के रीति रिवाज, वैद्यकीय व्यवस्था, कृषि यातायात व्यवस्था आदि तमाम प्रकार के विषयों का भिन्न-भिन्न अधिकारियों द्वारा अध्ययन किया कराया था। हमारी

इन तमाम व्यवस्थाओं को कैसे तहस-नहस कर दी जाए, समग्र राष्ट्र पर अधिकार प्रभुत्व स्थापिक कर इस देश की अपार सम्पत्ति का किस प्रकार शोषण किया जाये और समूची प्रजा कैसे ईसाई बना दी जाए, उसकी व्यवस्थित योजनाएं तैयार की गई थीं। इन योजनाओं के षडयंत्रों में हम फंस गए और हमारी अधोगति हुई।

क्यो सबको एक ही शिक्षा?

एक विश्व की रचना में तथाकथित देशी अंग्रेजों का सहयोग

अंग्रेज यहाँ से विदा हुए इससे पूर्व अंग्रेजी शिक्षा द्वारा जिन तथाकथित अंग्रेजों को तैयार करते गए, उनके हाथों हमारे धर्म, संस्कृति, समाज व्यवस्था आदि का सत्यानाश बड़ी तेजी से होता जा रहा हैं। भारतीयों को यथाशीघ्र, शराब, मांसाहार और विदेशी रहन-सहन के प्रति प्रवृत किए जाते हैं, जिससे उनका 'One World' यानी 'एक ही विश्व' (गोरों का राज्य) और और 'One Religion' अर्थात् 'एक ही धर्म' (ईसाई धर्म) का स्वप्न पूरा हो पाए। 'One World' यानी किसी एक ही सत्ता का समस्त विश्व पर शासन नहीं, लेकिन वर्तमान युग की बदली हुई परिस्थिति में विश्व बैंक तमाम अश्वेत प्रजाओं पर, सहायता के नाम पर कर्ज का बोझ लाद कर अपना प्रभुत्व जमा दे। अर्थात् एशिया और अफ्रीका की तमाम प्रजाओं पर विश्व बैंक का प्रभुत्व स्थापित हो जाए। गोरी ईसाई राज्य सत्ताएँ इस विश्व बैंक की साझेदार हैं। विश्व की तमाम अश्वेत प्रजाओं पर प्रभुत्व स्थापित कर उनके 'One World' यानी 'एक विश्व' राज्य के लक्ष्य के प्रति बड़ी तेजी से गति किये जा रहे हैं।

आज विश्व बैंक की सबसे मजबूत पकड़ विश्व के दूसरे नंबर के बड़े गैर-श्वेत और गैर ईसाई देश भारत पर हैं, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। अंग्रेजी शिक्षा देकर तैयार किए गए तथाकथित भारतीय अंग्रेज ही इस स्थिति के सर्जक हैं।

अंग्रेज भले ही यहाँ से चले गए हों, लेकिन उन्होंने अंग्रेजी भाषा, शिक्षा, रहन-सहन, आचार-विचार आदि के जो विषैले बीज बोये हैं, उसका परिणाम हम आज भुगत रहे हैं।

भारतीय शिक्षा पद्धति सर्वोत्तम थी

भारतीय शिक्षा पद्धति सर्वोत्तम और मोक्षदायिनी थी। उसका प्रसार प्रत्येक घर में था। हमारी शिक्षा के विषय में पूरी जानकारी इकट्टा करने के बाद, उसे खत्म कर, उन्होंने हिंसक, जुगुप्साप्रेरक, शोषक और विकासलक्षी शिक्षारूपी शस्त्र का हम पर एक प्रयोग किया है जिसे 'मोहास्त्र' कह सकते हैं। हम उससे मोहित होकर उसके चक्कर में फँस गए हैं फिर भी उसमें गौरव मानते हैं।
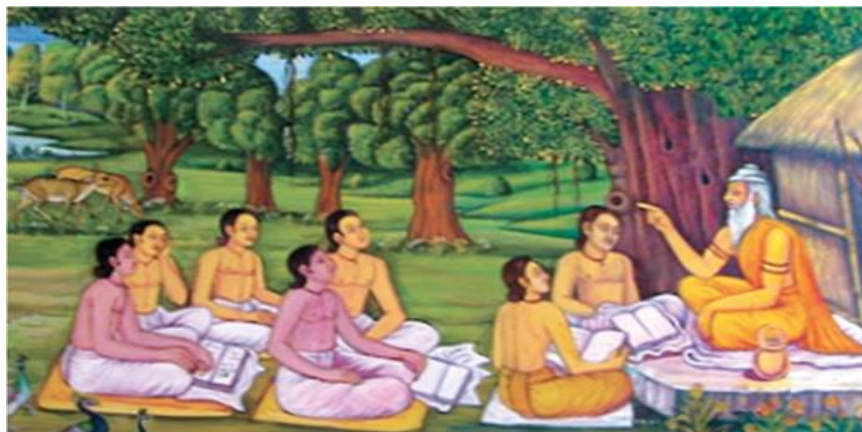
प्राचीन भारत के निवासियों की शिक्षा-संस्थाओं के बारें में ई.स. 1823 के कंपनी शासन के एक विवरण में बताया गया है कि 'शिक्षा की दृष्टि से भारत के अनेक गाँवों की जो उन्नत स्थिति है, वैसी स्थिति दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं।'

(Report of Select Committee on the Affairs of the East India Co. Vol.1.Page 409 Published in 1832)

इस रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि अंगेजों ने भारत पर अपना प्रभुत्व जमाने से पूर्व की हमारी शिक्षा व्यवस्था की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली थी।

इंग्लैण्ड़ द्वारा अपनायी गई हमारी शिक्षा-पद्धति

डॉ एण्डबेल नामक एक प्रसिद्ध अंग्रेज शिक्षाशास्त्री ने भारत की शिक्षा व्यवस्था का अभ्यास कर इंग्लैण्ड़ में उस पद्धति का अमल किया था। उसके अच्छे परिणाम देखकर ईस्ट इण्डिया कंपनी के नियामकों ने 3 जून 1814 के रोज बंगाल के गर्वनर जनरल को एक पत्र लिखा कि 'शिक्षा की जिस पद्धति का प्रयोग भारत के आचार्यों द्वारा पूर्व से जारी है, उसी पद्धति के आधार पर हमारी शालाओं में भी शिक्षा दी जानी चाहिए, क्योंकि उससे शिक्षा-पद्धति अति सरल और सुगम हो पाती हैं'।

(Letters from the Court Of Directors of Governor General in Council of Bengal, Dated 3rd, June 1814)

शिक्षा की यह व्यवस्था इतनी सुदृढ थी कि भारत में हजारों वर्षों से शासनों का उलटफेर होते रहने पर भी इन शिक्षा-संस्थाओं को कोई हानि नहीं पहुँच पाई, क्योंकि सल्तनतों के उलटफेर के पीछे हिन्दू धर्म और संस्कृति के विनाश का उद्देश्य नहीं था, अपित राजसत्ता की लालसा थी। यदि हिन्दू धर्म और हिन्दी संस्कृति के विनाश की भावना भी हो तो उसके लिए पशुबल उपयोग के सिवा अन्य कोई चारा न था।

लेकिन भारत के जिन इलाकों पर अंग्रेजों ने प्रभुत्व जमाया, वहाँ उनकी घुसपैठ बल प्रयोग द्वारा न थी, बल्कि भेदी षड़यंत्रों के साथ धोखाधड़ी और भारतवासियों की वफादारी के गलत इस्तेमाल के कारण हुई थी। सत्ता-प्राप्ति के बाद हमारे धर्म संस्कृति के सर्वनाश के लिए और हमारी शिक्ष-संस्थाओं एवं शिक्षआ-पद्धति को खत्म कर, लोगों को अनपढ़ और निरक्षर रखना उनका उद्देश्य था।

पोषक बलों का खात्मा कर दिया

भारत की सुव्यवस्थित प्रख्यात विद्यापीठों और गावों कि शिक्षा संस्थाओं को देखते – ही – देखते खात्मा कर दिया गया। तलवार से नहीं, बल्कि जहाँ से उनका पोषण प्राप्त करने के स्त्रोत बह रहे थे, वहीं सुरंगे दाग दी। इसका सही ख्याल हमें तत्कालीन बेलारी जिले के कलेक्टर ए.डी केम्पबेल के ई.स. 1823 के एक विवरण से होता है । वे लिखते हैं कि ‘इस समय ऐसे अंसख्य परिवार हैं, जो अपने बच्चों को जरा भी शिक्षा नहीं दे पाते ।........ मुझे यह बताते हुए दुःख होता है कि देश क्रमशः निर्धन होता जा रहा है।’

भारतवासियों को शिक्षा देने के विरुद्ध उग्र विरोध

किसी भी प्रजा का सर्वनाश करना हो तो उसे उसके धर्म, संस्कृति और भाषा से अलग कर देना चाहिए। भाषा ही तो धर्म और संस्कृति की वाहक है। अतः भाषा के विनाश द्वारा धर्म और संस्कृति अपने आप ही नष्ट हो जाती है। भाषा का नाश करने के लिए विद्या-अध्ययन, पठन-पाठन कराने वाली संस्थाओं और साधनों का नाश कर देना चाहिए।

इस सिद्धान्त के आधार पर ई.स. 1757 से ही अंग्रेज शासक भारतवासियों की शिक्षा संस्थाओं को हिन्दवासियों के शिक्षा देने के सवाल पर ब्रिटिश शासकों द्वारा उग्र विरोध किए जाने के बाद उनमें से कुछेक को ही अपने (ब्रिटिश) प्राचीन साहित्य और विज्ञान की जानकारी दी जाए, ऐसे प्रस्ताव के समर्थन में उसने कहा- 'अंग्रेजी शिक्षा द्वारा हिन्दू समाज में एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना चाहिए, जो जिन पर हम शासन करते हैं ऐसे असंख्य भारतीय लोग और हमारे बीच समन्व का काम करें। वह वर्ग ऐसा होना चाहिए कि जो हमारी शिक्षा प्राप्त करने के बाद केवल वर्ण और खून से ही भारतीय हो, लेकिन रुचि, भाषा, विचार और भावना की दृष्टि से अंग्रेज बन गया हो'।

तन मन और धन की बर्बादी

चौथी पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिए 7 अरब 83 करोड़ 31 लाख रूपये निश्चित किए गए थे। जिससे निम्नानुसार विद्यार्थी संख्या उस योजना की समयावधि में होगी, ऐसा अंदाज लगाया गया था।

कक्षा एक से पाँच	-	689 लाख
कक्षा छह से आठ	-	176 लाख
कक्षा नौ से ग्यारह	-	98 लाख
कक्षा विश्वविद्यालय अभ्यास	-	27 लाख

कुल संख्या 990 लाख

उपर्युक्त विवरण के अनुसार प्रथम कक्षा में दाखिल हुए 689 लाख विद्यार्थियों में से केवल 27 लाख विद्यार्थी कालेजों में प्रवेश पा सकते थे। वे नौकरी के अलावा शायद ही दूसरा कोई काम कर सकते थे। सरकार और बड़ी-बड़ी औद्योगिक कंपनियाँ, दोने साथ मिलकर भी इन लाखों उपाधि-धारकों को नौकरी दे नहीं पाती।

तो फिर उद्योगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए गिनती के शिक्षितों को पाने हेतु लाखों युवकों को कॉलेजों और शालाओं में खींच कर उनके मन, तन एवं उनके मां-बाप के धन की बर्बादी ही की जाती रही है। वास्तव में यह शिक्षा नहीं हैं, लेकिन राष्ट्र के उत्तम बुद्धिधन का उद्योगों द्वारा किया जाने वाला अपहरण ही हैं।

पाँचवी कक्षा तक पहुँचते पहुँचते ही 513 लाख बच्चों को पढ़ाई छोड़कर मजदूरी के लिए भटकना पड़ता है। यह प्राप्त नहीं होती तो अधिकतर संख्या बेकार होकर पूरक मजदूरी की खोज में भागदौड़ मचाती रहती है। थोड़े से लोग समाजविरोधी प्रवृत्तियों में भी लग जाते हैं।

शिक्षा क्षेत्र के इस षड़यंत्र को बंद करों।

शिक्षा के इस समूचे षड़यंत्र पर रोकथाम लगाकर, यदि इसमें परिवर्तन न लाया गया तो भयानक परिस्थिति से देश बर्बाद हो जाएगा। 1853 में अंग्रेजों को अनपढ़ भारतवासियों की ओर से जो खतरा महसूस हो रहा था, वही खतरा अब अर्धशिक्षित भारतवासी देश की सुरक्षा के लिए पैदा कर रहे हैं।

हम ऊपर देख चुके हैं कि चौथि पंचवर्षीय योजना में शिक्षा पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिए 7 अरब रूपये अलग निकाले गए थे, जबकि उद्योगों में 1671-72 तक, सार्वजनिक क्षेत्र में कारखाने खड़े करने के पीछे 552 अरब रुपये लगाए गए, जबकि निजी क्षेत्र में 9864 करोड़ रूपयों की लागत से 13084 फैक्ट्ररियाँ स्थापित की जा चुकी थीं, जिनके पीछे केवल 41 लाख लोगों को रोजगार मिला।

देश में 5,75,721 गाँव हैं, उनमें 3,18,1611 गाँवों में 500 से भी कम आबादी है। 1,32,873 गाँवों में 1000 से भी कम लोग बसते हैं। 10 हजार से अधिक आबादी वाले नगर तो केवल 1800 ही हैं।

उद्योग बेकारी दूर करने में सहायक नहीं बन पाए हैं।

हमारा देश आजाद हुआ, तब देश में 40 लाख लोग बेकार थे। उसके बाद लोगों को रोजगार देने के नाम पर 14,916 करोड़ रूपयों की लागत से कारखाने बनाए गए। बेकारों की संख्या 40 लाख से बढ़कर 4 करोड़ तक पहुँच गई। इन फैक्ट्ररियों में मानव संसाधन पूरा करने के लिए समग्र प्रजा पर शिक्षा का राक्षसी और निर्थक बोझ डाला गया। देश के लाखों आशावान् युवकों को आज भी हताश बनाकर बेकारी, बीमारी, अपराध और मंहगाई से पीड़ित समाज में धकेल दिया जाता हैं।

बढ़ती हुई बेकारी के इस प्रवाह का कारण जनसंख्या वृद्धि बताकर आत्म-प्रवंचना करना सरकार का पुराना शगल है। क्योंकि आबादी में बढ़ावा 50 प्रतिशत है जबकि पब्लिक सैक्टर के ही औद्योगिक कारखानों में पूंजी लगाने का वृद्धि प्रमाण 358 प्रतिशत और बेकारी की वृद्धि 900 प्रतिशत है।

और, फिर वर्तमान शिक्षा द्वारा प्रजा के चारित्र्य का स्तर भी ऊँचा नहीं उठा है। भ्रष्टाचार और सामाजिक अपराधों में जिस प्रकार लगातार वृद्धि होती जा रही है, वह हमारी नैतिक गिरावट की सूचक हैं। बेकारी बेहद बढ़ी है। जो वर्ग मानसिक रूप से भारत विरोधी था, उसके दिमाग को हम भारत-

उन्मुख नहीं बना पाए। देश में जगह-जगह पर होने वाले कौमी दंगे इसके सबूत हैं। स्वाधीनता के पच्चीस सालों तक जो राष्ट्रीय भावना थी उसका बहुत जल्द वाष्पीकरण हो गया और उसके स्थान पर प्रादेशिक भावना बलवती होने लगी हैं। राष्ट्रीय एकता को हड़प कर लेने वाली इस स्थिति का कारण है- अंग्रेजों द्वारा लिखित भारत का बेहद झूठा, आधारहीन परिकथाओं जैसा कल्पित इतिहास। इस इतिहास ने विभिन्न कौमों और प्रान्तों के बीच वैमनस्य पैदा किया है। इसी जहर के कारण प्रत्येक राज्य में और केन्द्र में भी कुर्सी-युद्धों का अंत नजर नहीं आता।

यह परिस्थिति किसी भी सयाने आदमी को चिंतित बना दे ऐसी हैं।

ग्रामीण बच्चों को डिग्रियों के पीछे न दौड़ाएं

ग्रामीण बच्चों का अधिकांश वर्ग किसानों, पशुपालकों और ग्रामीण कारीगरों द्वारा बना हुआ है। उन्हें अपने पैतृक धंधे करने होते हैं। इन धंधो को छोड़कर व उन उपाधियों के पीछे दौड़ेगें तो बेकारी का बोलबाला हो जाएगा और कृषि, पशुपालन और ग्रामीण उद्योग नष्ट हो जाएँगे, जो अंधेरगर्दी में परिणत हो सकता है और राष्ट्र की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। राष्ट्र को पालने, पोषने और प्रजा की जीवन-जरूरतें पूरी करने का कर्तव्य इन बच्चों को ही निभाना होगा। इस कार्य में उन्हें कॉलेज की उपाधियाँ किसी काम में की नहीं आती।

उन्हें कृषि और पशुपालन सीखना हो तो B.Ag.या Veterinary Surgeon की उपाधि लेने की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

यदि सच्चे मन से शुद्ध हृदय से मानवजाति को संकटपूर्ण स्थिति से उबार कर विश्व को शांति और कल्याणकारी, मंगलमयता प्रदान करना है, तो भारतीय ऋषि-मुन-महात्माओं द्वारा मोक्ष चार पुरुषार्थों की सनातन संस्कृति को आत्मसात् करना होगा। जिसके आधार पर यह विश्वशांति, मानवता का कल्याण एवं मंगलमय स्वरुप टिका हुआ है, यह शाश्वत सत्य हैं।

भारत में एक बहुत बड़ी क्रान्ति शूरु हुई है कि गुरुकलों का पुनः प्रस्थापन युगानुकुल रूप में हो रहा हैं।

क्योंकि जहाँ पर सर्वांगीण और समग्र शिक्षा मिलेगी वही पर बच्चा आगे जाएगा।

जब तक समाज शिक्षा का दायित्व अपने हाथ में नही लेता, सरकार चाहकर भी परिवर्तन नही कर सकती ।

स्वाभिमान और समृद्धि की कुंजी है

स्थानीय संसाधन और स्थानीय कौशल   - अतुल जैन

(लेखक दीनदयाल शोध संस्थान के सचिव हैं, लेकिन इस लेख में उनके विचार निजी हैं।)

पूरे विश्व में इस समय हाहाकार मचा हैं, मंदी का एक भंयकर दौर चल रहा हैं, पश्चिम की सभी अर्थव्यवस्थाएँ एक-एक कर इस दल-दल में धंसती चली जा रही है। अपना देश अगर अभी तक इस भयानक परिस्थिति से बचा हुआ है तो सिर्फ इसलिए कि वैश्वीकरण की चकाचौंध के बावजूद उसका एक बहुत बड़ा वर्ग अभी अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है और इसके अधिष्ठान में है, हमारे किसान, हमारे कारीगर, हमारी परिवार व्यवस्था और पंरपराओं में हमारी आस्थआ व उनके प्रति हमारा प्रेम। ये परम्पराएं सिर्फ सामाजिक स्तर पर ही नहीं, आर्थिक रूप से भी हमें मजबूत बनाए हुए हैं।

शहरों ने, शहरीकरण की प्रवृत्ति ने परंपराओं को तोड़ने की कोशिश जरुर की है, लेकिन हमारी सामाजिक व्यवस्थाओं ने कम से कम गांवे में तो उन्हें अभी थामे रखा है। इसका हमें गर्व होना चाहिए, परंतु यह भी सच है कि गाँवों से बड़ी तादाद में शहरों की तरफ पलायन हो रहा हैं, हजारों की संख्या में बेरोजगार युवक नौकरी की तलाश में रोजाना शहरों की ओर कूच करने लगे हैं, इसके लिए सरकारी नीतियाँ जिम्मेदार है, तो हम स्वयं भी उतने ही जिम्मेदार हैं, समाज ने अपनी आवश्यकताएं, पसंद- नापपसंद, इच्छाएं-अनिच्छाएँ, सभी शहरों के समान ढालने शुरु कर दिए, अपने संसाधनों की अनदेखी कर, अपने कौशल को तुच्छ समझ कर हम नौकरी पर आश्रित होने लग गए हैं।

गाँव के लोहार का बेटा अगर स्कूली पढ़ाई के साथ-साथ अपने दादा और पिता से उनके हुनर के कुछ राज समझता है, उन्हें काम करते हुए देखता हैं, उन्हें सुनता है और कभी-कभी हाथ बटाता है तो यह कोई तथाकथित बाल-श्रम के कानून में नहीं आता, यह तो वांछित हैं, होना ही चाहिए, गलीचे बनाने वाले किसी परिवार के बच्चे अगर उस खानदानी पेशे में शुरु से ही दिलचस्पी लेने लगते हैं तो क्या वे वर्तमान, दिशाहीन स्कूली शिक्षा से बेहतर शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहें होते?

चरखा स्वयं एक कीमती मशीन है, हाथ कताई ही दरिद्रता को भगाने का और धन के अभाव को असंभव बनाने का एक मात्र सुलभ उपाय है। - गांधी जी

.

आधुनिक शिक्षा को कडी चुनौती

अमेरीका के हॉवर्ड विश्वविद्यालय से लेकर भारत के आई.आई.टी. तक में क्या कोई ऐसी शिक्षा दी जाती है कि छात्र की आँखों पर रूई रखकर पट्टी बांध दी जाए और उसे प्रकाश की किरण भी दिखाई न दे, फिर भी वह सामने रखी हर पुस्तक को पढ़ सकता है! है न चौंकाने वाली बात? पर इसी भारत में किसी हिमालय की कंदरा में नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री के गृहराज्य गुजरात के महानगर अहमदाबाद में यह चमत्कार आज साक्षात् हो रहा हैं। तीन हफ्ते पहले मुझे इस चमत्कार को देखने का सुअवसर मिला। मेरे साथ अनेक वरिष्ट लोग और थे। हम सबको अहमदाबाद के हेमचन्द्रचार्य संस्कृत गुरुकुल में विद्यार्थियों को अद्भुत मेधा शक्तियों का प्रदर्शन देखने के लिए बुलाया गया था। निमंत्रण देने वालों के ऐसे दावे पर यकीन नहीं हो रहा था, पर वे आश्वस्त थे कि अगर एक बार हम अहमदाबाद चले जाएं, तो हमारे सब संदेह स्वतः दूर हो जाएंगे और वही हुआ, छोटे-छोटे बच्चे इस गुरुकुल में आधुनिकता से कोसों दूर पारंपरिक गुरुकुल शिक्षा पा रहे हैं, पर उनकी मेधा शक्ति किसी भी मंहगे पब्लिक स्कूल के बच्चों की मेधा शक्ति को बहुत पीछे छोड़ चुकी है।

दूसरा नमूना उस बच्चे का हैं, जिसे आप दुनिया के इतिहास की कोई भी तारीख पूछो, तो वह सवाल खत्म होने से पहले उस तारीख को क्या दिन था, ये बता देता है। इतनी जल्दी तो कोई आधुनिक कम्प्यूटर भी जवाब नहीं दे पाता। तीसरा बच्चा गणित के 50 मुश्किल सवाल मात्र ढाई मिनट में हल कर देता है। यह विश्व रिकार्ड है। ये सब बच्चे संस्कृत में वार्ता करते हैं, शास्त्रों का अध्ययन

करते हैं, देशी गाय का दूध-घी खाते हैं। बाजारू सामानों में बचकर रहते हैं। यथासंभव प्राकृतिक जीवन जीते हैं और घुडसवारी, ज्योतिष, शास्त्रीय संगीत, चित्रकला आदि विषयों का इन्हें अध्ययन कराया जाता हैं। इस गुरुकुल में मात्र 90 बच्चे हैं पर उनके पढ़ाने के लिए 120 शिक्षक हैं। ये सब शिक्षक वैदिक पद्धति से पढाते हैं। बच्चों की अभिरुचि अनुसार उनका पाठ्यक्रम तय किया जाता है। परीक्षा की कोई निर्धारित पद्धति नहीं है। पढकर निकलने के बाद कोई डिग्री भी नहीं मिलती। यहाँ पढने वाले ज्यादातर बच्चे 15-16 वर्ष से कम आयु के हैं और लगभग सभी बच्चे अत्यंत संपन्न परिवारों के हैं। इसलिए उन्हें नौकरी की चिंता भी नहीं है, घर के लंबे-चौडे कारोबार संभालने है। वैसे भी डिग्री लेने वालों को नौकरी कहाँ मिल रही है? एक चपरासी की नौकरी के लिए 3.5 लाख पोस्ट ग्रेजुएट लोग आवेदन करते है। ये डिग्रियां तो अपना महत्व बहुत पहले खो चुकी है। इसलिए इस गुरुकुल के संस्थापक उत्तमभाई ने यह फैसला किया कि उन्हें योग्य, संस्कारवान, मेधावी व देशभक्त युवा तैयार करने हैं, जो जिस क्षेत्र में जाएं, अपनी योग्यता का लोहा मनवा दें और आज यह हो रहा है। दर्शक इन बच्चों की बहुआयामी प्रतिभाओं को देखकर दांतो तले अंगुली दबा लेते हैं।

खुद डिग्रीविहीन उत्तम भाई का कहना है कि उन्होंने सारा ज्ञान स्वाध्याय और अनुभव से अर्जित किया है। उन्हें लगा कि भारत की मौजूदा शिक्षा प्रणाली, जोकि मैकाले की देन है, भारत को गुलाम बनाने के लिए लागू की गई थी। इसीलिए भारत गुलाम बना और आज तक बना हुआ है।

उत्तम भाई और उनके अन्य साथियों के पास देश को सुखी और समृद्ध बनाने के ऐसे ही अनेक कालजयी प्रस्ताव है जिन्हें अपने-अपने स्तर पर प्रयोग करने सिद्ध किया जा चुका है, लेकिन उन्हें चिंता है कि आधुनिक मीडिया, लोकतंत्र की नौटंकी, न्यायपालिका का आडंबर और तथाकथित आधुनिक शिक्षा इस विचार को पनपने नहीं देंगे। क्योंकि ये सारे ढांचे औपनिवेशिक भारत को झूठी आजादी देकर गुलाम बनाए रखने के लिए स्थापित किए गए थे, लेकिन वे उत्साहित है यह देखकर कि हम जैसे अनेक लोग, तो उनके गुरुकुल को देखकर आ

रहे हैं, उन सबका विश्वास ऐसे विचारों की तरफ दृढ़ होता जा रहा है। समय की देर है , कभी भी ज्वालामुखी फट सकता है।

शिक्षा को धर्मानुसारी बनाने की आवश्यकता है....

-इन्दुमती कटदरे

सयोंजक, पुनरुत्थान विद्यपीठ, अहमदाबाद

मनुष्य वैसा ही होता है जैसी शिक्षा उसे मिलती है। समाज भी वैसा ही होता है जैसी उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। समाज यदि संकटग्रस्त है, मनुष्य यदि दीन-हीन, दुर्गुणी और दुराचारी है और समाज के लिए कंटक समान है तो समझना चाहिए कि उस समाज की शिक्षाव्यवस्था ठीक नहीं है।

आज ऐसी ही स्थिति है। समृद्धि और संस्कृति दोनों ही क्षेत्र में केवल हमारे ही देश ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की स्थिति चिन्ता करने योग्य है। कितने ही देश भुखमरी की अवस्था में पहुँच गए हैं। संस्कारो का ह्रास हो रहा हैं। स्वतंत्रता, मानवीय गौरव, सुरक्षा, समृद्धि, सद्गुण आदि मनुष्य-जीवन को गौरवान्वित करने वाले तत्वों का अभाव चारों ओर दिखाई दे रहा हैं। इन सभी संकटों से यदि मानव-समूह को मुक्त करना हैं तो शिक्षा के विषय में पुनर्विचार करने की आवश्यकता हैं।

पुनर्विचार करते समय ध्यान में रखने की बात यह है कि सुसंस्कृत समाज का निर्देशन, नियमन और नियंत्रण करने वाला तत्व धर्म है। 'धारणाद्धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः' सम्पूर्ण लोक को धारण करता है इसीलिए यह धर्म है। आज भले ही अनेक प्रकार के निहित स्वार्थों तथा अज्ञान के कारण धर्म को उलटी सुलटी व्याख्याओं से उलझा कर उसके अर्थ का अनर्थ कर दिया गया हो, धर्म के बिना प्रजा की सुस्थिति हो नहीं सकती। समाज जीवन धर्मानुसारी होना चाहिए यह निर्विवाद सत्य हैं।

जीवन को धर्मानुसारी होने के लिए शिक्षा को धर्मानुसारी होना चहिए। शिक्षा ज्ञानसत्ता है। धर्मसत्ता और ज्ञानसत्ता मिलकर ही समाजजीवन को सही दिशा देते हैं।

हम देख रहे हैं कि आज की शिक्षा धर्मानुसारी नहीं रह गई हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में मोक्ष लक्ष्य है और धर्म अधिष्ठान है। अर्थ और काम को धर्म के अविरोधी होना चाहिए। यह सुसंस्कृत और समर्थ समाज की रीति है। परंतु आज सब कुछ अर्थ के नियंत्रण में चलता है। धर्म को अर्थ के आगे गौणत्व प्राप्त हुआ है। जब अर्थ सब से अधिक प्रभावी होता हैं और शेष सब उसके गौणत्व में होते हैं तब समाज में अंसस्कृति की प्रतिष्ठा होती है और समृद्धि भी क्षीण होती हैं।

समाज को इस संकट से बचाने के लिए शिक्षा धर्मानुसारी बने इस बात की चिन्ता करनी चाहिए। यह चिन्ता शिक्षकों को करनी चाहिए, यह तो ठीक हैं, परंतु इसका सही अधिकार धर्माचार्यों का है। संपूर्ण समाज का और शासन का भी मार्गदर्शन करने का अधिकार धर्माचार्यों का है।

वर्तमान में इस परंपरा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। वास्तव में इसकी आवश्यकता निरंतर होती ही हैं क्योंकि धर्म पर चलने वाला समाज ही श्रेष्ठ और चिंरजीवी समाज होता हैं।

भारत को धर्मनिष्ठ बनकर विश्व का मार्गदर्शन करना है। यह उसका ईश्वरप्रदत्त कर्तव्य है। इस कर्तव्य को निभाने के लिए उसे समर्थ बनना

होगा। यह सामर्थ्य ज्ञान का, प्रेम का और तप का होगा। ऐसा सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए भी धर्मानुसारी शिक्षा की आवश्यकता हैं।

हमने जो विकास का रास्ता लिया है, वह विकास नहीं है, वह तो रावण की सर्वनाश करने वाली लंका का रास्ता है। अगर देश को बदलना हो तो गुरुकुलम् चलाना ही चाहिए। - डॉ प्रवीण तोगडिया

1. इस देश की बहुत बड़ी विशेषता रही है कि मानवजीवन के लिए जो अनिवार्य है, वह निःशुल्क था। शिक्षा अनिवार्य है तो वह निःशुल्क थी। वैदकीय सेवाएँ निःशुल्क थी।

2. राजा का बेटा जहाँ पढ़ता था वहाँ किसान का बेटा भी पढ़ता था। हमारा संस्कृतिक पतन भी हुआ और मैकाले ने हमारा ब्रेनवाश करने का काम किया। अंग्रेज तो चले गये पर 'काले अंग्रेज' यहाँ छोड़कर गये, जिनका चिंतन, जिनकी सोच मूलतः इस देश की संस्कृति और मानव-सभ्यता एवं विश्वकल्याण के साथ सुसंगत नहीं है। दुर्भाग्य की बात है कि आज का समाज-जीवन इतना कम्पलेक्ष(जटिल) बन चुका हैं, कि व्यक्ति उस रास्ते पे नहीं चलेंगे तो जी नहीं पायेंगे। ना आर्थिक दृष्टि से, ना सामाजिक दृष्टि से।

3. कहते है कि प्रलय आता है तब ईश्वर पुनः सृष्टि निर्माण के लिए कुछ बचाकर विध्वंस करता है ताकि प्रलय के बाद पुनः सृष्टि निर्माण प्रारंभ कर सके। वैसे ही संस्कृति के महाप्रलय काल कि में उत्तमभाई ने पुनः निर्माण की प्रक्रिया यहाँ प्रारम्भ की है। पुनर्निर्माण कठिन होता है। मुश्किल होता है। क्योंकि इन्सान अकेला निकलता है, दुनिया हँसती है, तो भी विचार को दृढ़ रखकर जो आगे जाता है, वह अपना मूल रास्ता लोगों को स्वीकृत कराने के लिए अपने चरित्र से और दृढ़ता से प्रयत्न करता है। ऐसी एक बड़ी प्रतिकृति शिक्षा

की यहाँ खड़ी होगी। आगे जाकर अनेक लोगों से चर्चा के आधार पर उन्हें विकसित करते जायेंगे।

4. पैसे नहीं है तो पानी नही मिलेगा। अब तो लगता है कि पैसे होंगे सांस ले पाओगे, वरना सांस भी नहीं ले पाओगे। इतना व्यापारीकरण दुनिया के इतिहास में कभी नहीं हुआ था।

5. चालीस साल पहले में गाँव में रहता था, हमारे गाँव में दूध नहीं बिकता था। लोगों को मुफ्त में देते थे। जिस देश में दूध नहीं बिकता था, घी नहीं बिकता था, उस देश में 12 रुपये में पानी की बोतल बिकने लगी है। फिर तो स्त्री और पुरुष बिकेंगे। उसमें आश्चर्य क्या है। आप पानी बेच सकते हो, अपने मूल्य बेच सकते हो, अपना इतिहास, अपने पुरखों, अपने मूल्य बेच सकते हो, अपना इतिहास, अपने पुरखों, अपने धर्म को और देश को भी बेच सकते हो।

6. इसलिए हमें शास्त्र की रक्षा करनी चाहिए, परंतु शास्त्र की रक्षा करने के लिए, शांति के लिए, अहिंसा की रक्षा के लिए इस देश में पुनः महान आर्य पंरपरा की स्थापना जरुरी है। हमारे दिल की कामना है कि भारत में हमारी आर्य परंपरा पुनः स्थापित हो।

7. मैकाले ने हमारी शिक्षा बदल दी। इस देश में 18 वीं सदी में अंग्रेज आये। भारत की शिक्षा-व्यवस्था अध्ययन किया। उन्होंने लिखा कि हिन्दू कैसे लोग हैं, जो अपने बच्चों को 'क, ख, ग, घ' नहीं सिखाते हैं। प्रत्येक के साथ एक श्लोक होता है, जो उनमें चरित्र का निर्माण करता है। हम सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं देते थे, अक्षरज्ञान के साथ उनमें चरित्र भी देते थे। आज की ये आधुनिक शिक्षण पद्धति ने प्रवीण तोगडिया को एक डॉक्टर बना दिया। मेरी पूरी मेड़िकल शिक्षा में नैतिक मूल्यों का एक भी पेज पर उल्लेख नहीं है। ये आधुनिक शिक्षा पद्धति है। मैकाले ने हमारी जो मूल्य युक्त शिक्षा पद्धति थी, उनका अध्ययन करने के बाद उसका सर्वनाश, गुरुकुल अकेले दक्षिण भारत में मद्रास में थे, जो मुफ्त पढ़ाते थे। तो इनकी व्यवस्था चलती कैसे थी? हर

एक के पास जमीन थी, राजा एक हिस्सा देता था और श्रेष्ठि एक हिस्सा देता था' अंग्रेजों ने हमारे सभी गुरुकुलों की जमीन समाप्त कर दी। राजाओं को खत्म कर दिया। इससे हमारी गुरुकुलों को टिकाने की व्यवस्था खत्म हो गई। जो भारत ने दुनिया को '0' शून्य दिया, एक से नौ का अंक दिया. वह भारत आज निरक्षर हो गया है और भारत में अंग्रेजों का शासन चलाने के लिए और क्लर्क पैदा करने के लिए जो शिक्षण पद्धति आई, उनके हम शिकार बन चुके है और उसी के द्वारा आगे ले जाने में लगे हुए हैं। वे भारत को आगे नहीं ले जाएँगे, भारत को सर्वनाश की ओर ले जाएँगे।

8. हमें आर्थिक समृद्धि चाहिए, पर सांस्कृतिक मूल्यों के अधिष्ठान पर चाहिए। आज विकास का मापदंड क्या है, पता है? मानव मूल्य नहीं है, प्रमाणिकता नहीं है, सत्य नहीं है। कितने फोर ट्रक हाईवे है, कितने लोगों के हाथ में मोबाईल है, कितनी कार और स्कूटर हैं। इस देश में मानव का मूल्यांकन मानवीय मूल्यों के आधार पर बंद हो गया है। इसीलिए, जो विकास का रास्ता हमने लिया है, वह विकास का नहीं है, यह तो रावण की सर्वनाश करने वाली लंका का रास्ता है।
9. अगर देश को बदलना है, तो गुरुकुल की शिक्षा अनिवार्य है और जैसे वैदिक जी ने कहा, संस्कृति का देशव्यापी अभियान चलाकर इस देश में सांस्कृतिक जागरण का महायज्ञ भी साथ में करना चाहिए और हमें लगता है कि उत्तमभाई का प्रयास भारत को भारत बनाकर रहेगा।

ज्ञान

आज अगर खेती के पंरपरागत औजार नहीं मिलते, तो उसका कारण है कि उन्हें बनाने वाले हाथ शहरों में कारखानों में बनने वाले ऐसे औजारों को सिर पर ढोने और ट्रकों तक पहुँचाने को मजबूर हैं। वहाँ वे अपने घर से, अपनी माँ, अपने परिवार से सैंकड़ों किलोमीटर दूर नर्क की जिंदगी जीने को शापित हैं, क्योंकि

उन्हें न उस लकड़ी का ज्ञान रह गया हैं जो उन्हें पड़ोस के जंगल से मिल जाया करती थी और जिससे उनके पिता हल बनाया करते थे, न ही उन्हें उस लकड़ी को बचाने व उसके संवर्धन की आवश्यकता महसूस हो रही है। इससे यहाँ स्थानीय कौशल लुप्त होता जा रहा हैं, वहीं स्थानीय संसाधनों के प्रंबधन में स्थानीय लोगों के भूमिका भी समाप्त होती जा रही हैं।
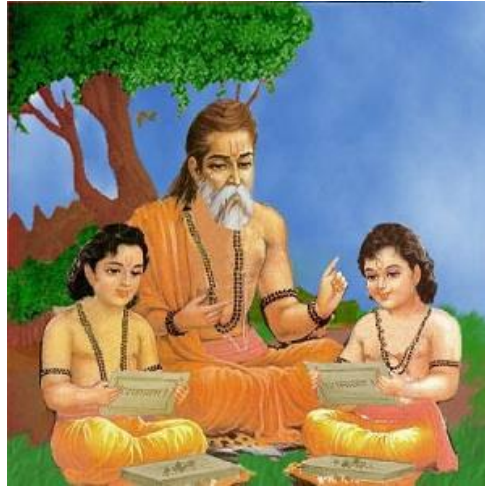
स्थानीय संसाधनों व स्थानीय कौशल की वकालत करते हुए इस लेख का उद्देश्य विकास के चक्र को वापिस घुमाना नहीं है। उसे युगानुकुल बने हुए भी, उसकी देशानुकूलता बनाए रखना हैं, हमारा समाज स्वभाव से ही उद्यमी रहा हैं, अब तक की सरकारी नीतियाँ व तथाकथित प्रगतिवादियों द्वारा बनाए वातावरण के कारण उसकी उद्यमिता को जबरदस्त धक्का पहुँचा है। अगर ट्रैक्टर ने हल और बैलगाड़ी को बेमानी बना दिया है, तो इसलिए क्योंकि हमारी पंरपरागत उद्यमिता कहीं उनके शोर में दब कर रह गई है।

आज आवश्यकता है, हमें अपने कारीगरी कौशल को फिर समझने की, उस पर गर्व करने की, कारीगर बंधु अपने भीतर छिपे हनुमान की शक्ति को स्वयं पहचानें, उसे जगाने के लिए किसी जाम्बवंत का इंतजार न करें।

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विविध डिग्रीओं के धारक व्यक्तिओं का निर्माण किया है। पर एक अच्छे मानवसमूह का निर्माण करने में वह असमर्थ रही है।

अपना बचपन भूल गए
बच्चे जब स्कूल गए....

- दुनिया में सबसे ज्यादा बेरहम और अमानवीय माँ-बाप आपको कहाँ मिलेंगे? जाहिर है, ऐसे माँ-बाप आपको हिन्दुस्तान में मिलेंगे और सरप्लस में मिलेंगे।
- इन माँ-बापों के पास ढेर सारा पैसा है और ढेर सारी मूर्खताएँ हैं। ये माँ-बाप अगर दुनिया में किसी चीज के बारे में सबसे कम जानते हैं, तो अपने बच्चों के बारे में।
- जैसे, माँ-बाप नहीं जानते कि उनके बच्चों के लिए धूप में रहना बहुत जरूरी है। विटामिन, टॉनिक या सिरप से नहीं, कुदरत से मिलता है और मुफ्त मिलता है।
- बच्चा मिट्टी में नही खेलेगा , तो बड़ा कैसे होगा? स्वस्थ कैसे रहेगा? बच्चे के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का निर्माण मिट्टी से होता है। बच्चों को मिट्टी से दूर रखना, बच्चों के साथ दुश्मनी निभाना है।
- मौजूदा लाइफ स्टाइल का मंत्र है – बच्चे को धूप से दूर रखिए, हवा से दूर रखिए, मिट्टी से दूर रखिए। जी हाँ, अब तो दो साल के बच्चों के लिए जिम खुल गए हैं।
- बच्चे को किस उम्र में स्कूल भेजना चाहिए? अपने बचपन के सबसे बेहतरीन चार-पाँच साल, बच्चों के खेलने, मस्ती करने और खाने-पीने के होते हैं। बच्चों का सबसे अनमोल समय उनके माँ-बाप उनसे छीन

लेते हैं। प्ले ग्रुप, नर्सरी, जूनियर केजी, सीनियर केजी, स्कैटिंग, डान्स क्लास, चित्रकारी यानी लिस्ट बहुत लम्बी है। तीन साल के बच्चे को गर्मागर्म खाने के बदले टिफिन का खाना?

- प्ले ग्रुप से फर्स्ट स्टैंडर्ड तक की पाँच साल की यह कवायद बच्चे को कहाँ ले जाती है? बच्चे गिनती या पहाड़े नहीं सीख पाते, लेकिन टीवी

पर आने वाला हर विज्ञापन उन्हें याद रहता है। उन्हें पता चल जाता है कि रोटी-सब्जी नहीं, पिज्जा-बर्गर उनका भोजन है।
लड़कियाँ 'कांटा लगा' फेम शेफाली बनना चाहती है और लड़के प्रभु देवा।
चार साल का बच्चा मेक्डोनल्ड़ में जाने के लिए घर सर पर उठा लेता है।
पाँच साल की स्वीट बच्ची अभी से फेयर और लवली की डिमांड करती है।

किताबों का बोझ, ट्यूशन, बर्थ-डे पर हर रोज मिलने वाली चॉकलेट, कभी मदर्स डे, तो कभी फादर्स डे, वन डे पिकनिक, चक्करदार फैशन प्रतियोगिताएँ और ऐसी ही ढेर सारी चीजों का अंबार लगा है बच्चों की दुनिया में। सिर्फ एक चीज गायब है – 'बचपन'।

कागज की कश्ती नदी में बहाने नहीं ले जाता कोई। छत पर चाँद दिखाने नहीं ले जाता कोई। लोरी गाकर नहीं सुलाता कोई। गुड़ का गर्म शीरा नहीं खिलाता कोई। न नानी की कहानियाए याद रहीं और दादाजी के भूने हुए चने खाने की आदत छूट गई। बच्चे समय की रफ्तार से तेज भाग रहें है। बहुत तेज, अपने माँ-बाप की पकड़ से दूर।।

न्यूयार्क का अब्राहम लिंकन स्कूल

आज समस्त भारतीयों की नजर यूरोप-अमरीका की तरफ है। उनकी हर बात हम आंखे मूंद कर अपनाने को तैयार है। जिस प्रकार कस्तुरी मृग की नाभि में होती है, फिर भी मृग अज्ञानता के कारण उसे पाने के लिए इधर-उधर भटकता है। उसी प्रकार सारी व्यवस्थाएँ हमारी संस्कृति में मौजूद है, पर आँखे मूद कर हम विदेशों की नकल करने में लगे है। मद्य, मांस, सेक्स , हिंसा के कुपरिणामों से त्रस्त होकर यूरोप-अमरीका के लोग शाकाहार, योग, अंहिसा, ध्यान आदि का मूल्य समझ कर उन्हें अपनाने का प्रयास कर रहे हैं। दुःख की बात यह है कि इन देशों के लोग जिन दुष्परिणामों को भुगत रहे हैं, उन्हें सारी बातों को फैशन के नाम पर हम अपनाने में गौरव अनुभव कर रहे हैं।

प्राचीन काल में हमारे वहाँ नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय थे। संसार के अनेक देशों के लोग हमारे यहाँ आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् विद्या (ज्ञान) वह है,जो हमें बंधनों से छुड़ा कर मुक्ति की ओर ले जाये। इस सुनहरे सूत्र पर हमारी शिक्षा आधारित थी। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को संस्कार, करूणा, नैतिकता आदि प्राप्त होते है। आज शिक्षा द्वारा बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ पाकर मानव डॉक्टर, वकील, इंजीनियर बन गया है। लेकिन उसमें मानवता नदारद है। जीवन के अमूल्य 15 या 18 वर्ष शिक्षा के पीछे लगाकर जब वह शिक्षित बनता है, तब शिक्षा अर्थउपार्जन

में कितनी उपयोगी होती हैं, यह सोचनेवाली बात हैं। वर्तमान शिक्षा ने हमारे सांस्कृतिक पर्यावरण को खूब विकृत किया है। आज मानवता ऑक्सिजन पर आखिरी सांस ले रही है। सरस्वती मंदिर आज अनाचार व दुराचार के अड्डे बन गये है। **हमारी प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था एवं उसमें प्रदान की जाने वाली शिक्षा का त्याग कर हम नौकरी व अर्थ के लालच में अंग्रेजी बाबू बनने के चक्कर में पड़ गये हैं।** शिक्षा-शक्तियों का स्पष्ट मत हैं कि बच्चें की बुद्धि का विकास मातृभाषा में शिक्षा के माध्यम से जितना अधिक हो सकता है, उतना अन्य भाषा के माध्यम से संभव नहीं है। फिर भी हम मातृभाषा को छोड़कर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा की अंधी दौड़ में शामिल हो रहे हैं। इसके दुष्परिणाम सामने आने लग गये हैं। अभी भविष्य की कल्पना तो और अधिक भयावह हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि न्यूयार्क (अमरीका) में अब्राहम लिंकन स्कूल प्रांरभ किया गया है, जिसका मुख्य कार्यालय लंदन में है। अन्य अनेक देशों में भी उसकी शाखाएँ प्रारंभ की गई हैं। वहाँ हमारी देवभाषा संस्कृत, प्रचीन गणित एवं तत्वज्ञान की शिक्षा दी जाती है। स्कूल-प्रबंधनने पांच वर्ष या उससे बड़ी उम्र के बच्चों को इस स्कूल में भेजने के लिए जनता से आग्रह किया है। उन्होंने कहा है कि अपने बच्चों को श्रेष्ठ, आदर्श स्वच्छ व प्रामाणिक नागरिक बनने के लिए हमारे स्कूल में भेजिए।

तत्संबधी हमारा ध्यान इस ओर कब जायेगा, जब हम अपनी पुरानी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर लौंटेगे। कम से कम अब न्यूयार्क के अब्राहम लिंकन स्कूल को देखकर तो हमें कुछ सोचना ही चाहिए। जितनी जल्दी हम इस ओर ध्यान दे पायेंगे, उतना ही लाभप्रद होगा।

-जे.के संधवी

तूफान आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है....

आपके पास अपने बच्चों के लिए वक्त नहीं है। इससे ज्यादा खतरनाक बात यह है कि आपके बच्चों के पास बहुत ज्यादा वक्त हैं, जिसे आप अनदेखा कर रहे हैं। आपकी यह उदासीनता बरकरार रही, तो आपका और आपके परिवार का विनाश निश्चित है। तूफान आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और उसकी दस्तक आप नहीं सुनना चाहते हैं तो फिर भगवान ही आपका मालिक हैं।

अतिरिक्त समय में आपके बच्चे क्या कर रहे हैं? चॉकलेट खा कर दाँत बिगाड़ रहे हैं, घंटों इंटरनेट के सामने बैठकर चेटिंग कर रहे हैं और अपनी आंखों की रोशनी गँवा रहे है।

आपके बच्चे मोबाईल पर संदेश भेजने के आदी हो चुके हैं। टाइम पास करने का यह जरिया उन्हें कैंसर दे सकता है। शहर में कितने डिस्कों है, कौन-सा डिस्को रात कितनी देर तक खुला रहता हैं, इसकी उन्हें पूरी जानकारी है। दिन में खुले रहने वाले डिस्कों में कम उम्र के लड़के-लड़कियों का जाना आम बात हैं, जिन्होंने अभी अपनी स्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं की।

फास्ट फूड़, फिल्मी गॉसिप, फैशन शो, पुल, और वीड़ियों गेम्स पार्लर, क्रिकेट, धूम्रपान, ड्रग्स इत्यादि आपके बच्चों की जिंदगी के अहम हिस्से बन चुके हैं। ये आपके बच्चों के सहज जीवन को समाप्त कर रहे हैं। रही-सही कसर टेलीविजन पूरा कर रहा है, जो चौबीसों घंटे आपके बच्चों के दिलो-दिमाग पर इस कदर छाया हुआ है कि वे एक तरह से टेलीविजन के दास बन गए

हैं। आपके बच्चे वही खाएंगे जो टेलीविजन कहेगा, वही पहनेंगे जो टेलीविजन चाहेगा, वहीं सोचेंगे जो टेलीविजन बोलेगा।

पश्चिमी अर्थशास्त्र की मान्यता है कि किसी समाज पर कब्जा करना हो तो, पहले उस समाज के बच्चों पर काबिज हो जाओ। देश तो अपने आप गुलाम हो जाएगा।

बच्चों को संस्कार दीजिए, संपत्ति नहीं...

बच्चों को संस्कार दीजिए, संपत्ति नहीं। बच्चों को नैसर्गिक भारतीय जीवन शैली में ढालना ही इसका एकमात्र उपाय हैं। मंदिर बनवाने से ज्यादा जरुरी है, बच्चों को मंदिर में जाने की पात्रता देना। वरना जिस तरह आज जीन्स और टाई पहन कर कृष्ण कन्हैया की आरती उतारने के दृश्य देखे जा सकते हैं, कल हमारे बच्चे कोकाकोला पीकर और बर्गर खाकर उपवास करेंगे और प्रसाद में अल्कोहलिक चॉकलेट देना घर की इज्जत का प्रतीक बन जाएगा।

संपत्ति बच्चों को बिगाड़ती है, संस्कार उन्हें सहज और नैसर्गिक जीवन जीने की ऊर्जा देते हैं। संपत्ति को भोगने की एक सीमा है, संस्कारों के साथ जीवन जीने के सुख अनंत हैं।

- नंदकिशोर राजगड़िया

आज तो जो विद्या की अर्थी उठा दे, वही विद्यार्थी...

बेरोजगारी का अंतिम पड़ाव अपराध है। अब तक यह माना जाता था कि अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे लोग ही अपराध की ओर मुड़ते हैं। आश्चर्यचकित करने वाली बात यह हैं कि आजकल पढ़े-लिखे लोगों का अपराध पर एकाधिकार हो गया हैं। फरार्टेदार अंग्रेजी बोलने वाले माफिया गिरोहों में शामिल हो रहे हैं। सरकारी तंत्र का पढ़ा-लिखा तबका हर तरह के अपराध करने में सबसे आगे है।
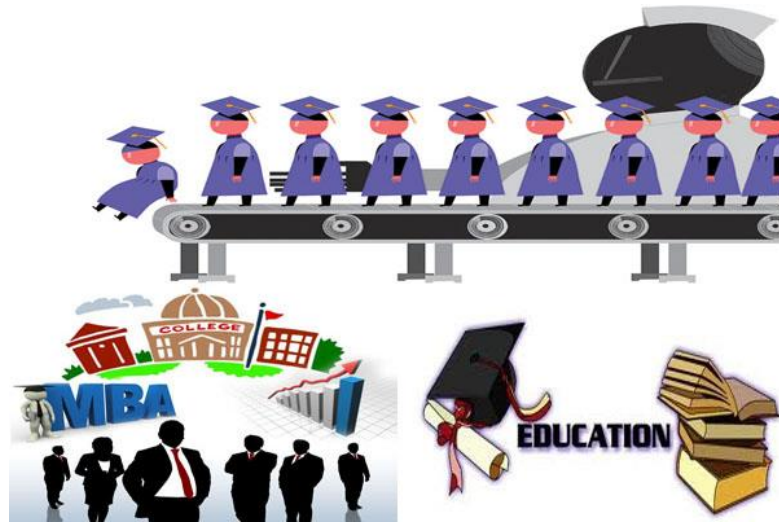
हिन्दुस्तान का अंगूठा छाप आदमी आज भी ईमानदारी से जीना चाहता हैं। जितना मिल जाए, उसी में गुजर-बसर करने को तैयार हैं।

शिक्षा का अर्थ तो यह होना चाहिए कि दूसरों के होठों की मुस्कराहट हमारी खुशी बने। हम विद्या और शिक्षा को पर्यायवाची न समझें। प्रशिक्षित तो हम पशु को भी कर सकते हैं, पर हम उसमें विवेक नहीं जगा सकते। यह विवेक ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है। विद्या जानना है जबकि शिक्षा सीखना। शिक्षा ली जाती है, विद्या अर्जित की जाती है। हमें आज के विद्यार्थियों को विद्या के साथ-साथ शिक्षा भी देनी हैं। आज तो जो विद्या की अर्थी उठा दे, वही विद्यार्थी।

-अनंत श्रीमाली (कवि, व्यंग्यकार और मंच संचालक)

भाषा अंग्रेजों की! शिक्षा अंग्रेजों की

अंग्रेजी राज में पिंडारिओं और ठगों ने मिलकर जितना हिन्दुस्तान लूटा होगा, उससे ज्यादा माल तो आज मात्र एक वर्ष में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी अपने मुनाफे के रूप में ले जाती हैं।

कौन कह सकता है कि अंग्रेज चले गए हैं? हमारे उठने, बैठने, सांस लेने, जीने की हर गतिविधि में अंग्रेज मौजूद है। कोई ऐसे ही थोड़े चला जाता हैं, अपने को छोड़कर?

कहाँ नहीं है, अंग्रेज? काला कोट पहन कर अदालत में मौजूद है। नीली वर्दी पहने हुए थाने में मौजूद हैं। लिप्टन की चुसकियाँ लेता हुआ हर दीवानखाने में मौजूद हैं।

मैंने हर बार उसे संसद में बजट पेश करते हुए देखा है। लंबा चोंगा पहन कर दीक्षांत-समारोहों में स्नातकों को डिग्रियाँ बाँटते हुए देखा है। सात-घोड़ो की बग्गी में सवार होकर गणतंत्र दिवस की परेड़ में सलामी लेते हुए देखा हैं।

घोड़ों की तरह हिनहिनाता हुआ रेसकार्स में मौजूद हैं अंग्रेज। वह विल्स की नेम-प्लेट चिपकाए हवा में बल्ला लहराता हुआ क्रिकेट के मैदान में मौजूद हैं। इक्तालीस दिसंबर की रात को नशे में धुत कभी पोप, कभी भांगड़ा करता हुआ हर संड़क पर मौजूद है।

अंग्रेज हर चुंगी नाके पर जजिया वसूल रहा है। फॉरेस्ट ऑफिसर की हैसियत से आदिवासियों पर लठियां बरसा रहा है। मंदिरों को मस्जिदों से लड़ाता है। किंगफिशर की एक बोतल पर रॉक संगीत का कैसेट मुफ्त दे रहा है । बेटियों और बहनों को लेडी डायना की लाइफ स्टाइल परोस रहा हैं।

संविधान अंग्रेजों का, संसदीय लोकतंत्र अंग्रेजों का, कानून अंग्रेजों का, न्याय और प्रशासनिक व्यवस्था अंग्रेजों की, शिक्षा-प्रणाली अंग्रेजों की, भाषा अंग्रेजों की! मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इतिहास में एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब आपको असली और खानदानी अंग्रेजी सिर्फ हिन्दुस्तान में मिलेंगे, इंग्लैण्ड़ में नहीं।

-अक्षय जैन

ऐसे माँ-बाप, माँ-बाप कम दुश्मन ज्यादा होते हैं....

जीवन संस्कारों से सजता व संवरता है। पढ़ी हुई शिक्षा तो भूली जा सकती हैं, लेकिन संस्कार जीवन पर्यन्त के पाथेय होते हैं। संस्कारहीन व्यक्ति दरिद्र ही नहीं होता, वह जीवन भर दुःख और तकलीफ भी भोगता हैं। सुसंस्कार सुरक्षा कवच हैं, जो मनुष्य के यात्रापथ को निरापथ बनाता हैं। पालक और बालक यदि सुसंस्कृत, धार्मिक और सभ्य हैं, तो धर्म, समाज और राष्ट्र का बहुमुखी विकास अवश्यभावी है। बालकों के संस्कार-निर्वाण में अभिवाचक भी कम जवाबदेह नहीं हैं। यदि माँ-बाप खुद संस्कारों के शिकार हैं, तो वे अपनी संतति से क्या अपेक्षा रख सकतें हैं? ऐसे माँ-बाप, माँ-बाप कम, दुश्मन ज्यादा होते हैं।

माँ –बाप का बेटे के प्रति कर्तव्य है कि वे अपनी संतान को इतना सुयोग्य बना दे कि सत्पुरषों सज्जनों की सभा में वह अग्रिम पंक्ति में बैठने कि पात्रता रखें और बेटे का माँ-बाप के प्रति कर्तव्य वह है कि वह ऐसा जीवन जिये, जिससे हर आदमी उसके माँ-बाप से पूछे कि तुमने किस पुण्य कर्म के उदय से ऐसा सुपुत्र पाया हैं। माँ किसी बेटे कि जागीर नहीं होती और संस्कारों पर किसी का एकाधिकार नहीं होता। पुत्र को जन्म देने मात्र से स्त्री माँ नही हो जाती और कोई पुरूष बाप नहीं हो जाता। माँ-बाप को अपनी संतान के प्रति उनके क्या-क्या कर्तव्य और दायित्व हैं, यह ज्ञान भी होना चाहिए।।

नाट्य कलाएं, संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य की विभिन्न विद्याएँ, कला के अलग-अलग रूप हैं और कलाएँ इंसान को संस्कारित करती है, उसे संवारती है, उसे पशु होने से बचाती है, उसके जीवन में संतुलन रखती है। मगर कलाकर्म के इस मर्म को पीछे धकेल कर व्यवसाय कर्म से जोड़ दिया जाये, तो जो नतीजे आने चाहिए वे आज की कटु मगर चिंताजनक सच्चाई हैं।

-मुनि श्री प्रसन्न सागरजी

भारतवर्ष में गुरुकुल कैसे खत्म हो गए?

1858 में Indian Education Act बनाया गया। इसकी ड्राफ्टिंग लोर्ड मैकाले ने की थी। लेकिन उसके पहले उसने वहाँ (भारत) के शिक्षा व्यवस्था का सर्वेक्षण कराया था, उसके पहले भी कई अंग्रेजों ने भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में अपनी रिपोर्ट दी थी। अंग्रेजों का एक अधिकारी था G.W. Litnar और दूसरा अधिकारी था Thomas Munro दोनों ने अलग-अलग इलाकों का अलग-अलग समय सर्वे किया था। 1823 के आस-पास की बात है। Litnar जिसने उत्तर भारत का सर्वे किया था, उसने लिखा था कि यहाँ 97% साक्षरता है और Munro, जिसने दक्षिण भारत का सर्वे किया था उसने लिखा कि यहाँ तो 100% साक्षरता है, और उस समय जब भारत

में इतनी साक्षरता थी और मैकॉले का स्पष्ट कहना था कि भारत को हमेशा-हमेशा के लिए अगर गुलाम बनाना है तो इसकी 'देशी और सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था' को पूरी तरह से ध्वस्त करना होगा और उसकी जगह 'अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था' लानी होगी और तभी इस देश में शरीर से हिन्दुस्तानी लेकिन दिमाग से अंग्रेज पैदा होंगे और जब इस देश की यूनिवर्सिटी से निकलेंगे तो हमारे हित में काम करेंगे और मैकॉले एक मुहावरा इस्तेमाल कर रहा हैं – 'जैसे किसी खेत में कोई फसल लगाने के पहले पूरी तरह जोत दिया जाता है वैसे ही इसे जोतना होगा और अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी।' इसलिए उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैरकानूनी घोषित किया, जब गुरुकुल गैरकानूनी हो गए तो उनको मिलने वाली सहायता, जो समाज की तरफ से होती थी, वो गैरकानूनी हो गयी, फिर संस्कृत को गैरकानूनी घोषित किया और इस देश के गुरुकुलों को घूम-घूम कर खत्म कर दिया, उनमें आग लगा दी, उसमें पढाने वाले गुरुओं को उसने मारा-पीटा, जेल में डाला।
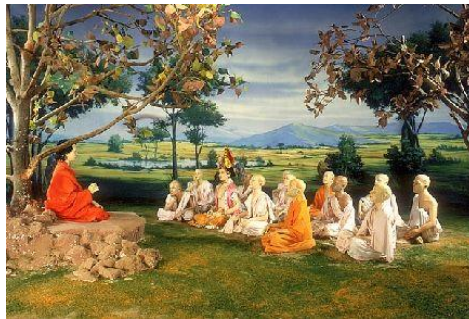
1850 तक इस देश में 7 लाख 32 हजार गुरुकुल हुआ करते थे और उस समय इस देश में गाँव थे '7 लाख 50 हजार, मतलब हर गाँव में औसतन एक गुरुकुल और ये जो गुरुकुल होते थे वो सब के सब आज की भाषा में 'Higher Learning Institute' हुआ करते थे, और ये गुरुकुल समाज के लोग मिलकर चलाते थे, न कि राजा, महाराजा।

इन गुरुकुलों में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। किन्तु सारे गुरुकुलों को खत्म किया गया और फिर अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया और कलकत्ता में पहला कॉन्वेन्ट स्कूल खोला गया, उस समय इसे 'फ्री स्कूल'

कहा जाता था। इसी कानून के तहत भारत में कलकत्ता यूनिवर्सिटी, बम्बई यूनिवर्सिटी, मद्रास यूनिवर्सिटि बनाई गयी और ये तीनों गुलामी के जमाने के यूनिवर्सिटी आज भी इस देश में है।

मैंकॉले ने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी थी, बहुत मशहूर चिट्ठी है वो। उसमें वो लिखता है कि, 'इन कॉन्वेट स्कूलों में ऐसे बच्चे निकलेंगे जो देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन दिमाग से अंग्रेज होंगे और इन्हें अपने देश के बारे में, अपनी संस्कृति के बारे में, अपनी परम्पराओं के बारे में कुछ पता नहीं होगा, इनको अपने मुहावरे नही मालूम होंगे। जब ऐसे बच्चे होंगे इस देश में तो अंग्रेज भले ही चले जाएँ इस देश से अंग्रेजियत नहीं जाएगी।' उस समय लिखी चिट्ठी की सच्चाई इस देश में अब साफ-साफ दिखाई दे रही है और उस एक्ट की महिमा देखिये कि हमें अपनी भाषा बोलने में शर्म आती हैं, अंग्रेजी में बोलते हैं कि दूसरो पर रोब पड़ेगा, अरे! हम तो खुद हीन हो गए हैं जिसे अपनी भाषा बोलने में शर्म आती हैं, अंग्रेजी में बोलते हैं कि दूसरों पर रोब क्या पड़ेगा। लोगों का तर्क है कि अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रिय भाषा है किन्तु दुनिया में 204 देश हैं और अंग्रेजी सिर्फ 11 देशों में बोली, पढ़ी और समझी जाती है, फिर यह कैसे अंतराष्ट्रीय भाषा है? शब्दों के मामले में भी अंग्रेजी समृद्ध नहीं, दरिद्र भाषा हैं। इन अंग्रेजों की जो बाइबल है वो भी अंग्रेजी में नहीं थी और ईशा मसीह अंग्रेजी नहीं बोलते थे। ईशा मसीह की भाषा और बाइबल की भाषा अरमेक थी। अरमेक भाषा की लिपि जो थी, वो हमारे बंग्ला भाषा से मिलती जुलती थी, वहाँ का सारा काम फ्रेंच में होता है। जो समाज अपनी मातृभाषा से कट जाता है, उसका कभी भला नहीं होता और यही मैकॉले की रणनीति थी।

अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा लूट मचाने वाली मल्टीनेशनल कंपनियों के लिए सेल्समैन तैयार कर रही हैं।

वैश्वीकरण और बेहिसाब आयात के कारण लाखों छोटे और माध्यम दर्जे के उद्योग एवं कारखाने बंद हो गए हैं। न तो नौकरियाँ है और न ही रोजगार के अवसर। स्वास्थ्य आम आदमी के हाथ से निकल गया हैं।

यह कहना कि अंग्रेजी जानने से सुबह उठते ही नौकरी मिल जाएगी या रोजगार में आप हेनरी फोर्ड का दर्जा हासिल कर लेंगे, आत्मछलना के सिवा कुछ नहीं है। जिस देश की आधी आबादी गरीबी रेखा के नीचे रहती हो, वहाँ इन्फोसिस की सफलता को आदर्श के रूप में पेश करना मानसिक दिवालियापन का सबूत हैं। सिर्फ अंग्रेजी के सहारे न तो आप चुनाव जीत सकते हैं और न ही फिल्मों या सीरियल में कामयाब हो सकते हैं।

हिन्दुस्तान के अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में क्या हो रहा है? मल्टीनेशनल कम्पनियाँ बच्चों को मुक्त केडबरी खिला रही हैं, जिसमें कीड़ा होता है। बच्चों को फिल्म दिखाकर आदी बनाया जा रहा हैं कि कोलगेट इस्तेमाल नहीं करोगे, तो मुहँ के सारे दाँत गिर जाएँगे। अब यह बताना जरुरी नहीं है कि कोलगेट में जानवरों की हड्डियों का चूर्ण मिलाया जाता हैं। हद तो तब हो गई जब एक विदेशी कंपनी द्वारा लड़कियों में नेपकिन बाँटे गए।

पूरी प्राथमिक शिक्षा विश्व बैंक चला रही हैं

आप जब अपने बच्चे को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजते हैं, तो उसे विदेशी संस्कृति का गुलाम बना देते हैं। वह बाईबल के बारे में ज्यादा जानता है, मैक्डोनाल्ड में जाने के लिए बैचेन रहता है और डनहिल के कश लगाना अपनी शान समझता है। थोड़ा बड़ा होने पर शुरु होते हैं – इंटरनेट पर चेटिंग, दिन में खुले रहने वाले डिस्कों में मस्ती, मांसाहारी खान-पान की ओर झुकाव। आप अनजाने में अपने बच्चों पर एक ऐसी लाईफ स्टाइल थोप देते हैं, जो नैसर्गिक नियमों के खिलाफ हैं।

अपनी भाषा को छोड़ने का अर्थ है- अपने धर्म, अपनी परम्पराओं और अपने नैसर्गिक जीवन से विमुख होना। एक दिलचस्प उदाहरण देना चाहूँगा। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाला बच्चा दिन में कम-से-कम बीस बार एक शब्द जरूर बोलता है – 'ओह, शीट!' शीट का अर्थ होता है विष्ठा, यानी टट्टी। हद तो तब हो गयी जब मंदिर में टाइट पेंट पहने एक लड़की अर्चना के लिए झुक नहीं पाई तो उसके मुँह से बरबस निकल पड़ा – ओह, शीट!!

बुनियादी सवाल मौजूदा व्यवस्था को बदलने का हैं।

अंग्रेजी भाषा का ज्ञान और अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा प्रणाली, दो अलग-अलग चीजे हैं। कोई अंग्रेजी सीख कर कंप्यूटर पर महारत हासिल करना चाहता हैं, तो यह उसका निजी चुनाव है। शिक्षा का जिस तरह से

व्यापारीकरण हो रहा हैं, उससे वह स्पष्ट है कि यूरोप और अमेरिका को भारत के बाजार पर कब्जा जमाने के लिए नए दलालों और गुलामों की सख्त जरुरत है। अंग्रेजी माध्यम की तालीम लूट मचाने वाली मल्टीनेशनल कम्पनियों के लिए सैल्समैन तैयार कर रही है। पूरी प्राथमिक शिक्षा को विश्व बैंक चला रही है। बुनियादी सवाल मौजूदा व्यवस्था को बदलने का है।

आई.आई. टी., प्रोफेशनल्स के एक ग्रुप ने मुझे भाषण देने के लिए आमंत्रित किया था। क्वालिटी के मुद्दे पर मेरा कहना था – 'हमारे बच्चों के मुकाबले यूरोप के बच्चे बेहद खूबसूरत, गोरे-चिट्टे और हष्ट-पुष्ट होते हैं। क्या अपने बच्चों की क्वालिटी सुधारने के लिए यूरोप के मर्दो को हम बुलाना पंसद करेंगे? ऐसी स्पर्धा में शामिल होने का क्या तुक हैं, जो हमें हमारी पहचान से बेदखल कर दें?'

अंग्रेजी सीखने वाला बच्चा स्मार्ट इंटेलीजेन्ट और एक्टिव होता है, ऐसी मान्यता धोखाधड़ी का पर्याय हैं। हमें अपनी औकात से रूबरू होना चाहिए। हम जैसे है, उसे स्वीकार करना ही हमारे जीवन का आनंद है। जिसे अपनी भाषा और रीति-रिवाजों और अपने पुरखों से मिलें जीवन-मूल्यों पर गर्व होगा, वही स्वाभिमान से जी सकता है। अपने बच्चों को अमेरिकन या यूरोपीयन बनाने के मोह से बचाइये।

-अक्षय जैन

स्कूल में बाजार....

अब वक्त आ गया है, जब हमें अपने बारे में सोचना चाहिए। क्या अपने समय का थोड़ा हिस्सा हर रोज अपने बारे में सोचने के लिए नहीं निकाल सकते? क्या हमें इस बात पर नहीं सोचना चाहिए कि हमारे बच्चों के साथ स्कूलों में क्या हो रहा हैं?

आईसक्रीम बनाने वाली एक कंपनी स्कूलों में एक इनामी प्रतियोगिता आयोजित करती है। जो बच्चा प्रमोटर कंपनी की आइसक्रीम के

ज्यादा से ज्यादा रैपर इकट्ठा कर सकता है, उसे कैमरा या कॉमिक्स इनाम में दिया जाता हैं। मुंबई के किसी मशहूर रेस्टोरेंट में किसी प्रसिद्ध कार्टून चरित्र के साथ लंच या डिनर का इंतजाम भी हैं।

टूथपेस्ट बनाने वाली एक कंपनी स्कूलों में एक फिल्म दिखाती हैं। बच्चों को बताया जाता है कि दाँत कैसे खराब होते हैं। फिर यह बताया जाता है कि उनके द्वारा बनाई हुई टूथपेस्ट से दांत कितने सुरक्षित रहते हैं। कितने ज्यादा मजबूत हो जाते हैं। हर बच्चे को कोलगेट की एक ट्यूब मुफ्त में दी जाती हैं।

बाजार की गिरफ्त से अब तक स्कूल बचे थे। अब वे भी इस बाजार की लपेट में आ गये हैं। बाजार पर कब्जा मल्टीनेशनल कंपनियों का है। मकसद और निष्कर्ष दोनों साफ हैं। बच्चों को एक ऐसी दुनिया में धकेला जा रहा है, जिसमें वे कुछ खास उत्पादों के आदी और गुलाम हो जाएं।

कालेज डे मल्टीनेशनल कंपनियाँ स्पोंसर कर रही हैं। आइसक्रीम, टूथपेस्ट से लेकर कोल्ड ड्रिंक्स नूडल्स और पिज्जा की मार्केटिंग के लिए बच्चों को टारगेट बनाया जा रहा है। जंक फूड़ को मासूमों के कंधों पर लादने के लिए मल्टीनेशनल कंपनियाँ उनके क्लास रूम तक पीछा कर रही है। हेपेटाइटिस के टीके से लेकर फन पार्क या 'जेल पेन' के प्रचार के लिए हमारे मासूम बच्चे इस्तेमाल किये जा रहे हैं।

अगर बच्चे आपके हाथ से निकल गए, तो समझिए आपका सब कुछ नष्ट हो गया।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि थोड़ा सा समय निकालिए और ठंड़े दिमाग से सोचिए। स्कूलों के संचालकों और प्रधानाचार्यों पर मुकदमा ठोकिए, मानवाधिकार आयोग में शिकायत दर्ज कराईये या अखबारों में विरोध करिए। आपके बच्चों की परवरिश का अधिकार आपका है। आप बच्चों की पढ़ाई की फीस अदा करते हैं। वह आपका हक बनता हैं कि स्कूलों में आपका बच्चों के साथ खिलवाड़ न हो।

जिस देश में गुरुकुल की परम्परा रही हो, विद्यालयों को ज्ञान मंदिर माना जाता रहा हो, सरस्वती की पूजा की जाती हो, वहाँ कारपोरेट जगत के दलालों के प्रवेश पर पांबदी लगनी चाहिए। कालेजों और स्कूलों के प्रबंधको कोइस बात की चेतावनी दी जानी चाहिए कि वे चंद पैसों की खातिर बच्चों के स्वास्थ्य और भविष्य को दांव पर नही लगा सकते।

बाजार आपकी जिंदगी को बेहतर नहीं बना सकता, तो यह कोशिश जरुर कीजिए कि बाजार आपको अपना गुलाम भी न बना सके। अगर बच्चे आपके हाथ से निकल गए, तो समझिए आपका सब कुछ नष्ट हो गया।

पढ़-लिख करके क्या करेगा
ओ मूर्ख नादान

मैं इस देश के लोगो को आज तक समझ नहीं पाया। कोई काम सलीके से नहीं करते। एक चपरासी की नौकरी के लिए पाँच हजार स्नातक लाइन लगाकर खड़े हो जाते हैं। जिस देश ने शून्य का अविष्कार किया,उस देश के लोग झाड़ू लगाने के लिए मारकाट पर उतारू हो जाएँ, तो इससे बड़ा क्रूर मजाक और क्या हो सकता है?

हमारे यहाँ सरस्वती की पूजा होती है। हमारे पास दुर्लभ ज्ञान विज्ञान के खजाने हैं, उपलब्धियाँ गिनाने जाएं, तो खत्म होने का नाम न लें। जो देश सोने की चिड़िया कहलाने वाला था, वहाँ चपरासी की एक अदद नौकरी अराजकता के दृश्य पैदा कर दे तो विश्व बैंक यकीनन हमें कर्ज देना बंद कर देंगे।

हर काम का एक सलीका होता है। अगर झाड़ू ही लगाना था, तो कॉलेज में पढ़ने ही क्यों गए? हैंरत की बात तो यह है कि देश में एक भी विश्व विद्यालय ऐसा नहीं हैं, जहाँ एक कुशल चपरासी बनने के लिए कोई पाठ्यक्रम चलाया जाता हो। साहित्य में एम.ए. करने के बाद चपरासी की नौकरी करनी पड़े तो किस कदर अफरा-तफरी मच जाएगी, यह सोचकर ही मेरी रुह कांप जाती है। चपरासियों के रूतबे में कमी आएगी और साहित्य में चपरासियों की मोनोपोली हो जाएगी।

जो पढ़े-लिखे नहीं है, उनका भविष्य उज्जवल है। आप पढ़े लिखे नहीं हैं तो फिल्मों में चले जाइए। किसी जमाने ऐसी सीख दी जाती था – 'पढ़-लिख कर के क्या करेगा, ओ मूरख नादान, अपनी किस्मत आजमा, जाके फिल्मिस्तान'।। या फिर आप राजनीति में चले जाइए। एक बिना पढ़ी-लिखी औरत बिहार की मुख्यमंत्री बन सकती है।

ऐसी शिक्षा-प्रणाली को छोड़ने का समय आ गया है, जो हर साल लाखों बेकारों को पैदा करती है। अगर इस देश के नवजवान की नियति चपरासी बनना है, तो यही सही। यह लोकतंत्र की विफलता है या सरकार की अक्षमता, इस पर 68 सालों के बाद अब बहस करने से कोई फायदा नहीं है। हाँ, यह कबूल करने का वक्त जरूर आ गया है कि हमें अपने परम्परागत हुनर वाले कामों को फिर से अपनाना है। स्वरोजगार के लिए सीबीएससी या आईसीएससी में दखिला लेने की जरूरत नहीं।

-ले.अक्षय जैन

यह बच्चा आपका कैसे हो गया?

जो बच्चा जन्म ले रहा है, वह आपका नहीं हो सकता । गर्भाधान से ही माँ को विलायती दवाईयाँ खानी पड़ती है। बच्चे को स्वस्थ रखने के लिए खाने-पीने का सारा सामान विदेशी कंपनियों का होता है। जूते फ्रांस से आए, खिलौने जापान के हों और कपड़े तो भई इंग्लैण्ड के बने है। वह जन्मदिन ही कैसा, जिसमें मोमबत्तियाण न बुझाई जाए और अंडा से बना केक न काटा जाए। प्लेग्रुप और नर्सरी से शुरु होने वाली यह लिस्ट इतनी लम्बी है कि खत्म होने का नाम ही नहीं लेती। क्या अब भी आप यह कहने की हिम्मत करेंगे कि 'यह बच्चा आपका है?' माँ-बाप भारतीय हो सकते हैं, लेकिन बच्चा भी भारतीय है, यह कौन कह सकता है?

वेंटीलेटर पर हिन्दी

हिन्दी आई.सी.यू. में भर्ती है। जब भी सितम्बर में हिन्दी दिवस आता है, उसे वेंटीलेटर पर रख दिया जाता है, ताकि सरकार जनता को यह एहसास करा सके कि हिन्दी अभी जिंदा है, हिन्दी मरी नहीं है। आत्म छलना का यह सालाना जश्न पिछले साठ सालों से जारी हैं।

उसे क्या कहा जाए? **राष्ट्रीय शर्म या अंग्रेजों की गुलामी?**

- यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा दिया जाना बंद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएँ अपनाने को मजबूर कर देता। जो आनाकानी करते उन्हें बर्खास्त कर देता। **-गांधी जी**
- मुझे लगता है कि जब हमारी संसद बनेगी, तब हमें फौजदारी कानून में एक धारा जुड़वाने का आन्दोलन करना पड़ेगा। यदि

दो व्यक्ति भारत की एक भाषा जानते हों और इस पर भी उनमें से कोई दूसरे को अंग्रेजी में पत्र लिखे ये एक-दूसरे से अंग्रेजी में बोले तो उसे कम से कम छः महीने की सख्त सजा दी जाएगी।। **-गांधी जी**

('स्वभाषा लाओं, अंग्रेजी हटाओं' पुस्तक से साभार)

जो शिक्षा हमें अच्छे-बुरे का भेद करना और अच्छे को ग्रहण करना तथा बुरे का त्याग करना नहीं सिखाती, वह शिक्षा सच्ची शिक्षा नहीं है। **-गांधी जी**

जब मैं राष्ट्रपति बनकर यहाँ आया तो हिंदी, उर्दू और गुरुमुखी के अखबार पढ़ने की इच्छा हुई, लेकिन ये अखबार मुझे नहीं मिले। मुझसे यह कहा गया कि राष्ट्रपति भवन में केवल अंग्रेजी के अखबार आते हैं। मुझे बहुत तकलीफ हुई। आजाद भारत में राष्ट्रपति भवन में जब भारतीय भाषाओं का कोई स्थान नहीं तो देश की एकता कैसे रह सकती है?

–पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

कम पढ़े तो गाँव छोड़ दे, ज्यादा पढ़े तो देश छोड़ दे।

अमेरिका से लौटते समय पत्रकारों ने स्वामी विवेकानंद से पूछा- 'अमेरिका की अमीरी देखने के बाद गरीबी से त्रस्त भारत के बारे में आप क्या सोचते हैं? स्वामीजी का जवाब इतिहास में अंकित हो गया – 'अब तक मैं अपने देश की इज्जत करता था, लेकिन अब पूजा करूँगा।

गुरुकुल की शिक्षा जीवन-विज्ञान से जुड़ी थी। या यूं कहें कि मात्र जीवन का वैज्ञानिक स्वरूप ही विद्यार्थियों को सिखाया जाता

था। राजपुत्रों से लेकर सामान्य परिवारों की संतानों के साथ प्रशिक्षण और अनुशासन पालन में कोई भेदभाव नहीं होता था। राजपुत्रों से लेकर सामान्य परिवारों की संतानों के साथ प्रशिक्षण और अनुशासन पालन में कोई भेदभाव नहीं होता था। खेती करना, गाय पालना, अपना भोजन स्वंय तैयार करना, जंगलों से लकड़ियाँ काट कर लाना, कुटिया लीपना या धोती-दुपट्टा पहन कर नंगे पैर घूमना, सूर्य नमस्कार करना, शिक्षा की बुनियादी बातें थी। इस शिक्षा ने अभिमन्यु, लव-कुश, श्रवणकुमार और चाणक्य पैदा किए। महावीर और गौतमबुद्ध दिए। विवेकानंद और दयानंद सरस्वती बनाए।

आज तो यह हाल है कि जो कम पढ़ लिख लेता है, वह गाँव छोड़ देता है, ज्यादा पढ़-लिख लेता है, वह देश छोड़ देता है।

आज का लाड़ला बच्चा.....

पहले समय पर उठते थे,
बड़ों को नमन करते थे।
मुख से राम-राम कहते थे,
पढ़ते भी थे और
खेतों खलियानों और घरों में
खट के काम करते थे।
समय पर खाते थे, खेलते थे
और समय पर आराम करते थे।
अब उठते हैं देर से
उठते ही शिकवे करते हैं ढेर से।

‘प्रणाम’ की जगह
‘हाय’ और ‘गुडमोर्निंग’ कहते हैं।
आंखे मसलते उबासी लेते,
बिना मुंह धोये ही
रामू को जोर से चिल्लाकर
चाय का आर्डर देते हैं
काम करना तो हीनता है,
अखबार के पन्ने पलटते पलटते
कितने घंटे बीत गए गिनता है।
फिर दोस्तो से बातें करने
फोन की लाईन मिलाएँ
स्कूल से ही कौन सी पिक्चर जाएं
फिर कौन से होटल में खाएं
कहाँ-कहाँ घूमने जाएँ।
मार्केट से क्या-क्या खरीद कर लाएँ,
इन्ही सब कामों की सूची बनाएं।
जब इस तरह की दिनचर्या में
पलता है भारत का भावी कर्णधार
भारत का होनहार
आज का लाडला बच्चा।
तो इस पीढ़ी की जब निकलेगी जमात
जिससे बनेगा भावी भारत का समाज
देश कितना करेगा तरक्की
सोचकर सिहर जाता हूँ।

हे भगवान्! इनको कहीं पीसने न पड़े
फिर किसी फिंरगी की चक्की।
मेरा दर्द कह उठता है।
वतन को फिर कहीं गिरवी न राख देना नादानों!
शहीदों ने बड़ी मुश्किल से ये कर्ज चुकाए हैं,
अपनी जिंदगी के चिराग बुझा कर
हमारे घरों के दीप जलाए हैं।

सुराज्य के महाअभियान में शामिल होइए

यह एक प्रमाणित तथ्य है कि कुछ सौ वर्ष पूर्व यह देश संसार का शिरमोर था। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, संगीत, कला, तकनीक, अर्थव्यवस्था, प्रशासन आदि सभी दृष्टिओं से हम अग्रणी थे। इस देश की सम्पूर्ण धरोहर को विदेशी आक्रांताओं द्वारा बार-बार बुरी तरह रौंद दिये जाने की भरसक कोशिशों के बाद भी महरौली का सीना ताने खड़ा बिना जंग लगा लौह स्तंभ, देश के कोने-कोने में बिखरे पड़े वास्तु कला के उत्कृष्ट नमूने, चरक-सुश्रुत में वर्णित आधुनिक चिकित्सा विज्ञान को भी चुनौती देने वाला शल्य-क्रिया विज्ञान, आज भी जहाँ-तहाँ दिख जाने वाला लोककलाओं का अद्भुत संसार, ढाका के मलमल सरीखे वस्त्रों की बानगी- आदि अनगिनत एतिहासिक-तथ्य अगर आज भी अपनी गौरवगाथा सुनाते दिख रहे हैं, तो कल्पना कीजिए कि विदेशी आक्रमणों से पूर्व भारत का अतीत कितना वैभवशाली रहा होगा।

हॉर्न धीरे बजाएं देश सो रहा है

लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि विदेशी लुटेरों के चलते महादानीयों का यह देश भिखारी बन चुका है। खास बात यह है कि लूट के लंबे इतिहास में भी हमारी सबसे ज्यादा लूट अंग्रेजों ने की। अंग्रेजों की गुलामी के दौर में सम्पत्ति-संसाधनों के साथ-साथ हमारी संस्कृति को भी तबाह करने की साजिश रची गई। अपने साम्राज्य की जड़ें मजबूत करने के लिए अंग्रेजों ने भारत की सारी व्यवस्थाओं को ही अपने अनुसार बदलने की मुहिम चलायी। इस मुहिम में वे काफी हद तक सफल भी रहें। अगर कुछ कसर बाकी रह गया था, तो आजादी के बाद अंग्रेजों के मानसपुत्रों ने आजादी के दीवानों के लाखों बलिदानों को बेमानी बना दिया हो।

कटु सत्य यह है कि हम आजादी के भ्रम में जी रहे हैं। अंग्रेज चाहते थे कि हम मानसिक रूप से गुलाम हो जाएँ, तो उन्हें बंदूकों-तोपों की भाषा न बोलनी पड़े, सो अब वही हो गया हैं। हमारा शासन-प्रशासन और विकास का संपूर्ण ढाँचा अब भी लगभग जस-का-तस है। इसी का नतीजा है कि आज हम कहीं ज्यादा बड़ी लूट के शिकार हो रहे हैं। जब हम एक ईस्ट इंडिया कंपनी की जेब अनिच्छा के बावजूद अंग्रेजी कोड़ों-बंदूकों के डर से भरते थे, पर अब मानसिक गुलामी के वशीभूत हम हजारों बहुराष्ट्रीय कंपनियों की जेब स्वेच्छा से भर रहे हैं।

देश लगातार कंगाल हो रहा है और नतीजे के रूप में बेरोजगारी भुखमरी का भयावह दृश्य सामने है। विकास के पश्चिमी तौर-तरीके के

चलते संस्कति का संकट भी अब भयानक रुप में दिखने लगा है। हिंसा, भ्रष्टाचार, बलात्कार, देश-समाज के प्रति संवेदनहीनता जैसी ढेरों समस्याएँ इसी की अनिवार्य परिणतियाँ हैं।

सवाल यह है कि क्या इस देश के वजूद को तिल-तिल कर समाप्त होते हुए हम देखते रहेंगे?

संसाधनों के अकूत भंडार से समृद्ध भारत की धरती पर रहते हुए और मेहनत कश होते हुए भी क्या इस देश की एक बड़ी आबादी फुटपाथों पर जिंदगी गुजारने और भूख से पेट मरोड़ने को ही हमेशा अभिशाप्त रहेगी? ऋषि-मुनिओं के इस देश में क्या अब माइकल जैक्सनों और मेडोनाओं के कार्टून ही तैयार होते रहेंगे?

अगर आप देश की इस वर्तमान दिशा और दशा से संतुष्ट हैं तो हमें आपसे कुछ नहीं कहना हैं। लेकिन यदि आप भी हमारी तरह चाहते हैं कि यह राष्ट्र स्वावलम्बी बनें, यहाँ का समाज खुशहाल हो, हर तरफ अमन-चैन हो, दया-करूणा-ईमानदारी-संयम का सांस्कृतिक प्रवाह इस देश में फिर कायम हो, तो हमें आपकी जरुरत है। हमारी अपील है कि आप भी सच्चे सुराज्य के लिए चल रहे इस महायज्ञ में शामिल होइए।

यदि भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि-व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य-व्यवस्था तथा न्याय-व्यवस्था का सम्पूर्ण स्वदेशीकरण हो जाए तो यह देश स्वावलंबी बन जाएगा, बेरोजगारी की समस्या नहीं रहेगी और सच्चे अर्थों में हमें स्वराज्य प्राप्त होगा। इस देश के विकास का ढाँचा, इस देश के सास्कृतिक मूल्यों भौगोलिक परिस्थितियों, संसाधनों और यहाँ की जनता की समझ व जरुरतों को ध्यान में रखकर ही बनाय जाना चाहिए, तभी अनगिनत समस्याओं से मुक्ति मिल पाएगी और एक बार फिर हम दुनिया के मार्गदर्शक की भूमिका में आ सकेंगे।

जिनमें अकेले चलने के हौंसले होते है,
उनके पीछे एक दिन काफिले होते हैं।

हम जो इंजीनियरिंग करते है. ये अग्रेंजो का बनाया पाठ्यक्रम है, ताकि अंग्रेज अपने लिए इंजीनियर तैयार कर सके, और हम भी उनके के लिए काम करते है,ज्यादातर इंजीनियर या तो देश के बाहर काम करता है, या फिर देश के अन्दर विदेशी कम्पनी में जिसे हम मल्टीनेशनल कम्पनी कहते है, हमारे देश में सन् 1200 से इंजीनियरिंग चली आ रही है,जब 18 विषय होते थे,ये बात कोई नही जानता क्योकि अंग्रेजों ने हमारे सारे दास्तावेज जला दिये थे। हमारे भारत में सबसे कम खर्चे पर इंजीनियर तैयार हो जाते है,इसलिए अमेरिका और युरोप वाले भारत में अपने लिए इंजीनियर तैयार करते है, और उनका ऐसा ही पाठ्यक्रम पढ़ाते है जो उनके देश के काम आ सके,यह पाठ्यक्रम कभी भी भारत के लिए काम नही आ सकता। इसलिए हमारी मानसिकता ऐसी बन जाती है कि हम या तो विदेश में जाकर काम करते है या फिर अपने देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनी में। अमेरिका और युरोप वालो का कहना है की भारतीये कुत्ते सबसे कम आय पर सबसे अच्छी सर्विस देते है,वे तो बस डॉलर में सैलरी सुनते है खुश हो जाते है।
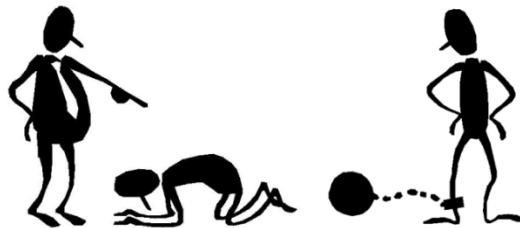
अब जागो और अपने देश के लिए काम करो।
जापान का इंजीनियर जापान के लिए काम करता है.
चीन का इंजीनियर चीन के लिए काम करता है,
जर्मनी का इंजीनियर जर्मनी के लिए काम करता है.
इसी तरह लगभग सारे देश अपने देश के लिए काम करते है,
लेकिन हमारे देश के लोगो को गुलाम बनने की आदत हो गयी है।
अब जागो और स्वदेश अपनाओं, गुरुकुल में ही शिक्षा दें।।

-रोबिन सिराना

दोस्तो आप
वेस्टर्न कल्चर
अपना रहे है
तो कोई दिक्कत नहीं
लेकिन यह जरुर याद रखें –
सूरज जब भी वेस्ट(पश्चिम)
में गया है, तब हमेशा डूबा ही हैं।

सौजन्य से
हेमचन्द्राचार्य गुरुकुलम्

हीरा जैन सोसायटी के निकट, रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद, गुजरात
दूरभाष – 9033543543

संग्रहकर्ता
रोबिन सिराना